श्री समवसरण विधान

रचयिता

बुंदेली संत मुनि श्री सुव्रतसागर जी महाराज

प्रकाशक

श्री जैनोदय विद्या समूह

कृति	:	श्री समवसरण विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज
संयोजक	:	बा. ब्र. संजय भैयाजी, मुरैना
संस्करण	:	प्रथम
प्रसंग	:	पंचकल्याणक सप्त गजरथ महोत्सव पावागिरिजी 3 से 9 दिसम्बर 2019
लागत मूल्य	:	50/-
प्राप्ति स्थान	:	बा. ब्र. संजय भैयाजी, मुरैना 9425128817
मुद्रक	:	विकास आफसेट, भोपाल

पुण्यार्जक-परिवार

बा. ब्र. सुनीता दीदी, बा. ब्र. हेमलता दीदी।
श्रीमती फूलाबाई जैन
श्री मुकेश-संगीता, श्री सुरेशचंद-विषमदेवी,
डॉ. अशोककुमार-विजयादेवी, श्री विजयकुमार-
गेंदादेवी, श्री सनतकुमार-येक्सीवाला जैन एवं
समस्त बुजरक परिवार पिपरई-अशोकनगर

अन्तर्भाव

श्री समवसरण विधान यह कृति संतशिरोमणि आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागरजी महाराज के परम प्रभावक, कविहृदय, बुंदेली संत शिष्य मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज के द्वारा तैयार की गई है। जिसका संकलन एवं संयोजन करके अतीव प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। यह कृति उन लोगों के लिए अत्यंत उपयोगी कृति है जो कि अल्प समयावधि में कोई विधान अनुष्ठान करना/कराना चाहते हैं। यह विधान 3 या 4 दिन में बड़े ही भक्ति भाव के साथ प्रभावना पूर्वक सम्पन्न किया जा सकता है। **इसमें अर्घ्यावली में सबसे पहले मानस्तंभ सोपान सम्बन्धी-50, चतुर्दिक मानस्तंभ सम्बन्धी-4, प्रथम चैत्यप्रासाद भूमि सम्बन्धी-15, द्वितीय खातिका भूमि सम्बन्धी-14, तृतीय लताभूमि सम्बन्धी-14, चतुर्थ उपवनभूमि सम्बन्धी-14, चतुर्वक्ष सम्बन्धी-4, पंचम ध्वजभूमि सम्बन्धी-14, षष्टम् वृक्षभूमि सम्बन्धी-14, चतुर्वक्ष सम्बन्धी-4, सप्तम स्तूपभूमि सम्बन्धी-14, चतुर्दिश नवस्तूप सम्बन्धी-4, अष्टम् श्रीमण्डपभूमि सम्बन्धी-24, बारह सभा सम्बन्धी-12 कुल 201 अर्घ्य अर्घ्यावली के रूप में तथा पूर्णार्घ्य व जयमाला आदि के मिलाकर लगभग 220 अर्घ्य हैं।** प्रभु भक्ति और गुणगान आगमानुकूल अत्यंत सरल भाषा एवं सारभूत शैली में प्रस्तुत किया गया है।

मुनिश्री की लगभग 85 कृतियाँ हैं जिनमें विधान-पूजा, कहानी, आरती, भजन, नाटक, मुक्तक, कविताएँ आदि सम्मिलित हैं। आपके विधानों में चारों अनुयोगों के विषय समावेश हैं। विधान करते समय ऐसा लगता है कि हम भगवान की भक्ति करने के साथ-साथ स्वाध्याय कर रहे हों। ऐसा प्रतीत होता है कि जो बातें यहाँ कही गईं हैं वे सब बातें हमारे आस-पास के वातावरण में समाविष्ट हैं। सिद्धान्त की बात को भी बड़ी ही सरल भाषा में प्रस्तुत किया गया है।

जिन्होंने इस कृति के प्रचार-प्रसार में प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से किसी भी माध्यम से सहयोग किया है वे सभी धन्यवाद के पात्र हैं। इस कृति के माध्यम से सभी लाभ लें इसी भावना के साथ गुरुदेव और मुनि श्री के चरणों में नमन...।

बा. ब्र. संजय, मुरैना

मंगलाचरण

मंगलं भगवान्नर्हन् मंगलं सुसिद्धेश्वरः,
मंगलं श्रमणाचार्यो मंगलं साधुपाठकौ।
मंगलं जिननामानि मंगलं नवदेवता,
मंगलं शाश्वतमंत्रं मंगलं जिनशासनं॥

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहन्ताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोये सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, एसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥ तेरा...
जिन माँ बाबुल ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥ तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहन्त सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आंसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।

नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के कांटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, पीछे से चाकू घौंपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥
अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।

नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहन्त प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥१॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥२॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥३॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥४॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥५॥
यही देवता हैं नवो पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥६॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥७॥
हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवो देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहन्त फिर सिद्ध हम भी॥८॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥९॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य

(लय–चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य

(सखी)

नहिं केवल अर्घ चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बन्धी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्रीआदिनाथ स्वामी अर्घ्य

(शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम वसुधा मिलती, अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शान्तिनाथ स्वामी अर्घ्य (मालती)

जब-जब शान्ति विधान किया ना, तब-तब है हर क्रिया अधूरी।
जब-जब है हर क्रिया अधूरी, तब-तब न कम हो आपस की दूरी॥
जैसे ही शान्ति विधान रचाए, अंदर से मुक्ति का पाया इशारा।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में अर्पित अर्घ्य हमारा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बन्धन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य (शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारण-ऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य (शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

तुम्हें सारथी बना लिया है, मोक्षपुरी के गजरथ का।
तुरत हमें दर्शन करवा दो, शुद्धातम के तीरथ का॥
कहो कहाँ हस्ताक्षर कर दें, हमको भी स्वीकार करो।
भक्त खड़े नत हाथ जोड़कर, हम सबका उद्धार करो॥

ॐ ह्रः मुनि श्रीसुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री समवसरण विधान

मंगलाचरण

ओम् नमः सिद्धेभ्यः, ओम् नमः सिद्धेभ्यः -२

(सुविद्या छन्द)

१. आओ! आओ! समवसरण की शोभा हमें लुभाए।
तीर्थंकरों को करके नमोऽस्तु, मोक्षमार्ग मन भाए॥
जो निर्ग्रन्थ श्रमण पथ देकर अर्हत सिद्ध बनाए।
संकट भय दुख क्या कर लें जब, आठों कर्म नशाए॥ ओम्..
२. सोलहकारण से तीर्थंकर, जिनवर बनते आप्त।
उदय समय में पुण्यफला को, समवसरण हो प्राप्त॥
जड़ चेतन की देख विभूति, भक्त हृदय अकुलाए।
जिनगुण की सम्पत्ति पाने, कर नमोऽस्तु गुण गाए॥ ओम्..
३. अब जिनशासन से तीर्थंकर, प्रभु का वैभव जान।
समवसरण की सभा रचाकर, कर आरंभ विधान॥
नवग्रहों का भय जय करके, मिथ्या पाप नशाएँ।
रोग शोक दुख कर्म विनाशें, मोक्षमार्ग अपनाएँ॥ ओम्..
४. अपने आवश्यक को पालें, भज संन्यास महान।
फिर अर्हंत सिद्ध पद पाएँ, स्व-पर करें कल्याण॥
तन मन चेतन स्वस्थ बनाने, समवसरण में आए।
'सुव्रत' को प्रभु समवसरण में, तनिक जगह मिल जाए॥ ओम्..
५. तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
समवसरण को करके नमोऽतु, जग का मंगल होवे॥ ओम्..

(पुष्पांजलिं...)

चौबीस तीर्थंकर पूजन (समुच्चय)

स्थापना (दोहा)

ऋषभनाथ से वीर तक, तीर्थंकर चौबीस।
समवसरण के ईश को, हो नमोऽस्तु नत शीश॥

(शंभु)

हे पुण्यफला! तीर्थंकर जी, तुम समवसरण आसीन हुए।
सो चौबीसों प्रभु हम पूजें, जो नभ में कमलासीन हुए॥
पर द्रव्यों के त्यागी तुमको, हम रागी बनकर मना रहे।
जो चिदानन्द तुम भोग रहे, वह चखने पूजा रचा रहे॥

(सोरठा)

घातिकर्म को नाश, समवसरण सुख भोगते।
आह्वानन कर दास, आश्रय पाने पूजते॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो...। (पुष्पांजलिं...)

जिस जन्म मृत्यु की पीड़ा से, हीरा सा आतम विखर रहा।
प्रभु उसे आपने ज्यों जीता तो, ज्ञान महल निज निखर गया॥
यह जन्म मृत्यु की भव धारा, हम मोड़ सकें जिनशासन से।
सो ऋषभ आदि महावीर प्रभु , हो तुमको नमोऽस्तु गवासन से॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

इस राग-बाग के चंदन ने, प्रभु के वन्दन से दूर किया।
निज का उपवन तो मिला नहीं, भव का संताप जरूर दिया॥
यह पाप ताप संताप मिटे, हम महक उठें जिन चंदन से।
सो ऋषभ आदि महावीर प्रभु , हो तुमको नमोऽस्तु गवासन से॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः संसार ताप विनाशनाय चंदनं...।

पर-पर कहने में जग तत्पर, पर पर को अब तक ना त्यागा।
पर के त्यागी को मुक्ति वरे, जिसके पीछे यह जग भागा॥
हम उस पद के प्रत्याशी हैं, जो मिले आत्म-अनुशासन से।
सो ऋषभ आदि महावीर प्रभु, हो तुमको नमोऽस्तु गवासन से॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

नर जीवन दे नारी कहती, अय नर! मुझमें मत उलझो रे।

हो सके त्याग जग नारी को, निज आतम नारी समझो रे॥
इस जन्म दातृ का मान रखें, अरु बचो भोग दुस्शासन से।
सो ऋषभ आदि महावीर प्रभु, हो तुमको नमोऽस्तु गवासन से॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

कुछ सोच रहे क्या-क्या खाएँ, कुछ सोच रहे अब क्या खाएँ।
यह पुण्य पाप की बलिहारी, जो चेतन स्वाद न चख पाएँ॥
निज ज्ञान रसोई हम चाहें, प्रभु चौबीसों जिनभगवन से।
सो ऋषभ आदि महावीर प्रभु , हो तुमको नमोऽस्तु गवासन से॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं ...।

अन्धे को सूरज चंदा क्या, क्या होली है क्या दीवाली।
बस ऐसे ही हम मोही हैं, आएँ खाली जाएँ खाली॥
जड़ दीप जला विश्वास करें, कल चमकेंगे हम भगवन से।
सो ऋषभ आदि महावीर प्रभु , हो तुमको नमोऽस्तु गवासन से॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

हम जहाँ गए उस रूप हुए, बस इससे ही विद्रूप हुए।
सान्निध्य आपका पाकर भी, क्यों अब तक न चिद्रूप हुए॥
यह कर्मों की बाधा हर लें, भगवान भक्त सम्मलेन से।
सो ऋषभ आदि महावीर प्रभु , हो तुमको नमोऽस्तु गवासन से॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

हम अपने हुए सो जग के हुए, अपराध यही कुछ कर बैठे।
अब हमें क्षमा कर अपना लो, हम नाथ आपके हैं बेटे॥
हम तेरे होंगे तब ही तो, फल पाएंगे निज चेतन से।
सो ऋषभ आदि महावीर प्रभु , हो तुमको नमोऽस्तु गवासन से॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

ज्यों लोहे को बस उसकी ही, खुद जंग मिला दे मिट्टी में।
यों गलत धारणा जीवों को, बर्वाद करें हर दृष्टि में॥
ले अर्घ्य धारणा शुचि करने, अब करें प्रार्थना भगवन से।
सो ऋषभ आदि महावीर प्रभु , हो तुमको नमोऽस्तु गवासन से॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

चौबीसों जिनराज के, समवसरण सुखकार।
पूजा लगे सुहावनी, गुण गाए संसार॥

(रोला)

गुण गाए संसार, भक्त हम करें नमोऽस्तु।
मण्डल को विस्तार, शीघ्र हम करें जयोस्तु॥
दुनियाँ की क्या बात, मुक्ति खुद राह निहारे।
ऐसे जिनवर नाथ, दीजिये हमें सहारे॥1॥
आप सर्व संपन्न, मोह को नष्ट किए ज्यों।
अंतराय आवरण, कर्म भी नष्ट हुए त्यों॥
तीर्थंकर पद नाम, हुआ कर्मोदय जैसे।
शीघ्र बने भगवान, पूज्य अरिहन्तों जैसे॥2॥
पाए केवलज्ञान, तभी इन्द्रासन डोले।
इन्द्र अवधि से जान, शीघ्र कुबेर से बोले॥
प्रभु पाए कैवल्य, रचो तुम समवस्रती को।
सुरपति का आदेश, पुण्य सुख दे धनपति को॥3॥
जाकर अतः कुबेर, नमोऽस्तु कर करें अर्चना।
समवसरण निर्माण, किए हैं सुन्दर रचना॥
जिसका वर्णन कौन, करें वचनों के द्वारा।
अतः कमा लो पुण्य, भक्ति की पाकर धारा॥4॥

(दोहा)

बारह योजन आदि का, क्रमशः घट घट अर्ध।
नेमिनाथ का डेढ़ हो, सवा पार्श्व का सर्ग॥

(सर्ग-रचना)

इक योजन का वीर का, समवसरण विस्तार।
हम तो सादर पूजते, यथाशक्ति सत्कार॥

(रोला)

यथाशक्ति सत्कार, करें हम जिनवर पूजा।
चौबीसों जिनराज, देव सा दिखे न दूजा॥

घाति कर्म को नाश, दोष अठारह जीते।
गुण धारे छ्यालीस, चिदातम का रस पीते॥
भक्त प्रार्थना समवसरण प्रभु हमको देना।
थामो भक्त पतंग, उड़ा शिवपुर तक देना॥
जड़ धन की क्या बात, आतमा का धन पाकर।
'सुव्रत' हों अर्हंत, चरण-गुण प्रभु के गाकर॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

(सोरठा)

महाजनों के मान्य, समवसरण चौबीस जिन।
हम अर्चक सामान्य, करते नमोऽस्तु रात दिन॥

(पुष्पांजलिं...)

मानस्तंभ पूजन

(दोहा)

बीस हजार सोपान चढ़, मुख्य द्वार के धाम।
चतु दिशि मानस्तंभ के, प्रभु को करें प्रणाम॥

(जिनगीता)

मान की मूरत रहे हम, मान मर्दन क्या करेंगे।
दर्श मानस्तंभ के कर, मान का मर्दन करेंगे॥
सो करें जिन अर्चना हम, मान का गिरिवर गलाने।
भक्ति से करते नमोऽस्तु, मुक्ति का मंडप रचाने॥

(सोरठा)

मानस्तंभ के नाथ, जिनशासन की शान हैं।
करो हृदय में वास, करते हम आह्वान हैं॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभस्थित-जिनबिम्बसमूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो...। (पुष्पांजलिं...)

मान के ही साथ जन्मे, मान के ही साथ मरते।
कंश जैसी हो दशा यदि, मान को हम तज न सकते॥
मान की यात्रा मिटाने भक्ति नैया खोजते हैं।
बिम्ब मानस्तंभ के भज, कर नमोऽस्तु पूजते हैं॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभस्थित-जिनबिम्बेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

मान को जब ठेस लगती, व्यर्थ के संताप होते।
कर दशानन सी अवस्था, जीव अपना चैन खोते॥
मान का संताप हरने, भक्ति चंदन खोजते हैं।
बिम्ब मानस्तंभ के भज, कर नमोऽस्तु पूजते हैं॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभस्थित-जिनबिम्बेभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

मान कर मानी बने हम, तत्त्व के ज्ञानी नहीं।
सो भटकते कौरवों सम, बन सके ध्यानी नहीं॥
स्वस्थ हो क्षतिग्रस्त जीवन, धाम अक्षय खोजते हैं।
बिम्ब मानस्तंभ के भज, कर नमोऽस्तु पूजते हैं॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभस्थित-जिनबिम्बेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

मान के ये कीट काटें, निज कली खिलने न देते।
रात दिन चुभते ही रहते, आप से मिलने न देते॥
मान के ये शूल हरने, पुष्प निज का खोजते हैं।
बिम्ब मानस्तंभ के भज, कर नमोऽस्तु पूजते हैं॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभस्थित-जिनबिम्बेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

स्वाद चक्खा मान का सो, कमठ जैसे रो रहे हैं।
आत्मा का स्वाद चखने, भाव अब तो हो रहे हैं॥
मान का विष त्याग करके, ज्ञान अमृत खोजते हैं।
बिम्ब मानस्तंभ के भज, कर नमोऽस्तु पूजते हैं॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभस्थित-जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

मान के जग जाल ने तो, विश्व को सम्मोह डाला।
दृष्टि पर पर्दा पड़ा सो, ना दिखे निज का उजाला॥
मान का हरने अँधेरा, दीप-मार्दव खोजते हैं।
बिम्ब मानस्तंभ के भज, कर नमोऽस्तु पूजते हैं॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभस्थित-जिनबिम्बेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

मान का ऊँचा हिमालय, जो गिराता है सभी को।
कर्म का पाताल देता, दे ना सिद्धालय किसी को॥
मान तज निर्वाण पाने, गन्ध निज की खोजते हैं।
बिम्ब मानस्तंभ के भज, कर नमोऽस्तु पूजते हैं॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभस्थित-जिनबिम्बेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

मान से बस फूल सकते, किन्तु कोई फल न सकते।
बीज दे तो दे अहं के, किन्तु अर्हम बन ना सकते॥
मान के तज फल विषैले, मोक्षफल को खोजते हैं।
बिम्ब मानस्तंभ के भज, कर नमोऽस्तु पूजते हैं॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभस्थित-जिनबिम्बेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

टेक मानस्तंभ को सर, मान को स्तंभ करके।
मान बढ़ता है हमारा, अर्घ्य से सम्मान करके॥
मान मानस्तंभ पर कर, आतमा निज खोजते हैं।
बिम्ब मानस्तंभ के भज, कर नमोऽस्तु पूजते हैं॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभस्थित-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...॥॥

(पूर्णार्घ्य)

क्रोध कर संसार जलता, मान कर ना प्यार पाओ।
कपट कर खोओ स्वजन को, लोभ कर धुतकार पाओ॥
इन कषायों पर विजय हो, पथ वही हम खोजते हैं।
बिम्ब मानस्तंभ के भज, कर नमोऽस्तु पूजते हैं॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभस्थित-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

धूलिसाल परिकोट के, करके द्वार प्रवेश।
चारों मानस्तंभ के, भक्त भजें परमेश॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो! जिनशासन की, जय हो! जय हो! जिनवर की।
जय हो! जय हो! समवसरण के, मानस्तंभ जिनेश्वर की॥
समवसरण सम मंदिर प्यारे, मानस्तंभ सहित होते।
मान हरें पर मान बढ़ाकर, कर्म रोग संकट खोते॥1॥
जो नीचे चौकोर सुहाने, ऊपर गोलाकार रहें।
नीचे-नीचे वज्रमयी हो, फटिक मणिमय मध्य रहें॥
ऊपर है वैडूर्य मणीमय, जिस पर कमल सुशोभित हों।
जिन पर चारों ओर स्वर्ण की, जिन प्रतिमाएँ पूजित हों॥2॥

छत्र चँवर घण्टा आदिकमय, दिव्य अलौकिक उज्ज्वल हों।
जिनपर रत्नों की मालामय, कलश कलशियाँ झिलमिल हों॥
कलशों के आजू-बाजू में, जिनशासन की ध्वजा उड़े।
ऐसा मानस्तंभ देखकर, भक्तों की श्रद्धा उमड़े॥3॥
ऊँचे-ऊँचे नभ स्पर्शी, बहुत दूर से दिख जाते।
जिससे मिथ्यादृष्टि जन के, मानी सिर झट झुक जाते॥
चारों मानस्तंभ लगें यों, नन्त चतुष्टय दर्शाते।
बिम्बों के अभिषेक इन्द्रगण, करके पर्व पुण्य पाते॥4॥
मानस्तंभ इन्द्र निर्मित हो, अतः इन्द्र ध्वज कहलाते।
जग सम्मान करें इनका पर, हम तो नमोऽस्तु कर ध्याते॥
मानस्तंभ जिनेश्वर जी के, दर्शन पूजन गुण गा के।
यही प्रार्थना हम करते है, जिन बिम्बों के पद ध्याके॥5॥
हमने विघटन किया स्वयं का, खुद को बढ़ा बनाने में।
किन्तु आज तक बन ना पाए, अब क्या हो पछताने में॥
मान मार्ग है पतित धाम का, अतः मान हम तजने को।
समवसरण को रचा रहे है, मानस्तंभ को भजने को॥6॥
पर पदार्थ के कारण हमने, व्यर्थ मान अभिमान किया।
मान त्यागना परम धाम दे, यह हमने पहचान लिया॥
नाथ! आपके नाम जाप से, 'सुव्रत' अपने काम करें।
लघु बनकर के प्रभु बन जाएँ, निज में निज विश्राम करें॥7॥

(सोरठा)

त्यागें मान कषाय, मानस्तंभ को पूज के।
मानस्तंभ हो जाए, सो नमोऽस्तु स्वर गूँजते॥

ॐ ह्रीं मानस्तंभस्थित-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

मानस्तंभ-सोपान अर्घ्य

(विष्णु)

तीर्थंकर अर्हंत प्रभु को, हम भी नमन करें।
भाव भक्ति से करके नमोऽस्तु, आतम मनन करें॥

(पुष्पांजलिं...)

पूर्व दिशा में विजय द्वार के, आगे चौक बना।
फिर सीढ़ी फिर मूल भाग में, स्थित रहे जिना॥
जिनको अर्घ्य समर्पित करके, अघ अज्ञान हरें।
पूर्व दिशा सम परम प्रतापी, केवल ज्ञान वरें॥

ॐ ह्रीं पूर्वदिशायां विजयनामक-द्वाराग्रे विद्यमान चतुष्कस्याग्रे सोपानसंयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥1॥

वैजयंत जयंत अपराजित, क्रमशः दरवाजे।
दक्षिण पश्चिम उत्तर में हैं, चौक सहित आगे॥
फिर सीढ़ी फिर मूल भाग में, प्रभु की प्रतिमाएँ।
जिनको अर्घ्य समर्पित करके, पुण्य धर्म पाएँ॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिक्षु-चतुर्णां-द्वाराणाम् अग्रे चतुष्कस्याग्रे चतुः सोपानसंयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥2॥

एक हाथ ऊँचाई वाले, एक हाथ चौड़े।
एक कोश लम्बाई वाले, जीना नहिं थोड़े॥
आदिनाथ के बीस हजार हैं, फिर जिन बिम्ब अहो।
जिनको अर्घ्य समर्पित करके, कैसा लगा कहो॥

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य विंशतिसहस्र-हस्तोच्चेन एकहस्तायतेन एककोशलम्बेन सोपानसंयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥3॥

क्रमशः तीर्थंकर तेईस के, फिर क्रमशः कम हों।
आगम विधि से जान समझकर, नत मस्तक हम हों॥
आगे-आगे जब पहुँचे तो, जिनदर्शन होते।
जिनको अर्घ्य समर्पित करके, मुक्ति बीज बोते॥

ॐ ह्रीं अंतिमत्रयोविंशति-तीर्थंकराणां यथाविध-हीन सोपानैः संयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥4॥

चार हाथ का एक धनुष जो, धरती से ऊपर।
पाँच हजार धनुष ऊँचे हो, तीर्थंकर जिनवर॥
साक्षात् श्री अर्हंत मिले अब, यही भावना है।
जिनको अर्घ्य समर्पित करके, प्रभु सा बनना है॥

ॐ ह्रीं चतुर्हस्तानां येकं धनुर्मत्वा मध्यभूमितः पंचसहस्रधनु प्रमाणोच्चे समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥5॥

सोपानों के दोनों बाजू, दो वेदी प्यारी।
साढ़े सात शतक धनुषों की, मोही सी न्यारी॥
वेदी बने कर्म भेदी सा, जिन मूरत पूजें।
जिनको अर्घ्य समर्पित करके, निज आतम खोजें॥

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्य सार्धसप्तशतधनुः स्थूल सोपान वेदिकासंयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥6॥

तरह-तरह की रचनाओं से, रचित खचित मणियाँ।
पीठासन से सहित वेदियाँ, दिखती हैं बढ़ियाँ॥
समवसरण की ये रचनाएँ, प्रभु तक ले जाएँ।
जिनको अर्घ्य समर्पित करके, मोक्ष महल पाएँ॥

ॐ ह्रीं वेदिकायाः नानाविध-रचनासम्पन्ने चतुष्के पीठसंयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥7॥

साढ़े सात शतक धनुषों की, गोलाकार रहे।
वेदी पर परिकोटे ऊपर, कमलाकार रहे॥
उसके ऊपर देव देवियाँ, प्रभु के पर्व करें।
जिनको अर्घ्य समर्पित करके, हम त्यौहार करें॥

ॐ ह्रीं वेदिकोपरि मूले सूची सप्तशतक-पंचशत् चापोपरि चूलिकास्थले लघुसूचीप्रमाणे गोलाकारकूटे स्थितदेवीदेवकृत जिनगुणगान-संयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥8॥

जिस पर खंभे बने मनोहर, छतरी मन भावन
जिस पर कलशा मणिमय शोभे, पहला यह आसन॥
तीन लोक का छत्र मिले अब, प्रभु दर्शन पाएँ।
जिनको अर्घ्य समर्पित करके, निज दर्शन पाएँ॥

ॐ ह्रीं उपरि कलशयुक्त-छत्रिकायुक्ते अधःस्तम्भसहिते प्रथम विष्ठरसंयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥9॥

आठ द्वार दूजी बैठक के, प्यारे आसन में।
तीन आमने तीन सामने, दो-दो दिशियन में॥
एक-एक है अन्य दिशा में, जिनसे प्रभु झलकें।
जिनको अर्घ्य समर्पित करके, पावन हों पलकें॥

ॐ ह्रीं द्वयोः दिशायोः सन्मुखत्रित्रिद्वारयुक्तेन तथा द्वयोः दिशयोः सन्मुखैकैकद्वारयुक्तेन द्वितीयविष्ठरेण संयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥10॥

खंभा आठ आठ दरवाजे, जिन पर गुमठी तीन।
जिन पर ग्यारह कलश शोभते, लगते सदा नवीन॥
समवसरण की इस रचना में, प्रभु हों कमलासीन।
जिनको अर्घ्य समर्पित करके, हम हों निज में लीन॥

ॐ ह्रीं अष्टाष्टस्तम्भयुक्तानां त्रित्रिगुमठी नामुपरि एकादशैकादश-कलशयुक्तानाम् अष्टाष्टद्वारयुक्त-वेदिकासंयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥11॥

एसी ही दूजी वेदी के, ऊपर बैठक हों।
खंभे दरवाजे कलशा भी, बहुत मांगलिक हों॥
जिनकी शोभा कौन कह सकें, मौन हुए ज्ञानी।
जिनको अर्घ्य समर्पित करके, मिले मुक्तिरानी॥

ॐ ह्रीं वेदिकोपरि बहुष्ठिरसंयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥12॥

पाँच हजार धनुष भूमि से, ऊपर जाकर के।
विजय नाम के दरवाजे के, अन्दर जाकर के॥
सुन्दर सा इक चौक बना जो, प्रभु तक पहुँचाता।
जिनको अर्घ्य समर्पित करके, भक्त जिन्हें ध्याता॥

ॐ ह्रीं समभूमितः पंचसहस्रचापोन्नतस्य विजयद्वारस्य अग्रे चतुष्क संयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥13॥

इसी चौक के आजू बाजू, बनी बैठकें हैं।
रत्न जड़ित हैं सुन्दर जिन पर, भक्त बैठते हैं॥
जिनकी शोभा लखते-लखते, प्रभु दिख जाएंगे।
जिनको अर्घ्य समर्पित करके, हम सुख पाएंगे॥

ॐ ह्रीं चतुष्कस्याग्रे पार्श्वद्वये विष्ठरेषु मध्ये नानाविधरचनायुक्त चतुष्संयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥14॥

(चौपाई)

वेदी आसन बनी सीढ़ियाँ, बने झरोखे छज्जे बढ़ियाँ।
ऐसे सुन्दर समवसरण में, करें नमोऽस्तु जिन चरणन में॥

ॐ ह्रीं विष्ठर बैठक सोपानवेदिका-मत्तवारणा-वारक-शोभासंयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥15॥

मणिमाला लटकें द्वारों पर, बहुत ध्वजाएँ उड़तीं ऊपर।
ऐसे सुन्दर समवसरण में, करें नमोऽस्तु जिन चरणन में॥

ॐ ह्रीं रत्नमुक्तानिर्मित-सकम्पबहुध्वजासंयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय

अर्घ्यं... ॥16॥

प्यारी बैठक में नर नारी, देव देवियाँ बने पुजारी।
ऐसे सुन्दर समवसरण में, करें नमोऽस्तु जिन चरणन में॥

ॐ ह्रीं पूर्वोक्त शोभासम्पन्नविष्ठरेषु देवीदेवनरनारीकृत-जिनराजगुणगानसंयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥17॥

(नरेन्द्र/जोगीरसा)

जीना चढ़ें खेद बिन क्षण में, प्रभु के अतिशय भारी।
ऋषभ देव की इन्द्रनील मणि, शिला गोल आकारी॥
मिलती बारह योजन वाली, केंद्र विराजे स्वामी।
समवसरण निज वैभव पाने, हम तो करें नमामि॥

ॐ ह्रीं जिनातिशयतः यत्सोपानानि खेदं बिना क्षणमात्र-चटनसमर्थानि एवम्भूत-नीलमणिनिर्मित-द्वादशयोजनवर्तुलशिलासंयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥18॥

शेष रहे तीर्थंकर प्रभु के, समवसरण हों ऐसे।
लेकिन क्रमशः घटते जाते, हम कह पायें कैसे॥
फिर भी वैभव कम ना होता, अतिशय धारी स्वामी।
समवसरण निज वैभव पाने, हम तो करें नमामि॥

ॐ ह्रीं अन्तिम-त्रयोविंशति-तीर्थंकरणाम् उत्तरोत्तरहीन रचनापरिमाण विशिष्ट-शिलासंयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥19॥

धूलिसाल का कोट मनोहर, समवसरण यों घेरे।
जैसे मानुषोत्तर पर्वत, ढाई दीप को घेरे॥
निज का वैभव निज में जैसे, धूलिसाल में स्वामी।
समवसरण निज वैभव पाने, हम तो करें नमामि॥

ॐ ह्रीं धूलिसालदुर्ग संयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥20॥

पंचरंग की रतन धूल से, धुलिसाल गढ़ शोहे।
इन्द्र धनुष सी चमक विखेरे, सबके मन को मोहे॥
काला पीला श्वेत लाल सा, दिखें वहीं से स्वामी।
समवसरण निज वैभव पाने, हम तो करें नमामि॥

ॐ ह्रीं पंचविधचूर्णनिर्मित गगनविसारि ज्योतिर्युक्त धूलिसाल दुर्गसंयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥21॥

प्रभु से ऊँचा चार गुना हो, धूलिसाल परकोटा।

ऊपर तो पतला सा होता, नीचे होता मोटा॥
इस विध बीचों बीच केंद्र में, शोभें जिनवर स्वामी।
समवसरण निज वैभव पाने, हम तो करें नमामि॥

ॐ ह्रीं जिशरीरतः चतुर्गुणोच्च-मूलभागद्वयस्थूले उपरि क्रमशः सूक्ष्मेण धूलिसालदुर्गेण-संयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥22॥

धूलिसाल की चार दिशा में, चार द्वार मन मोहें।
रहे विजय वैजयंत जयंत अपराजित भी शोहें॥
जिनमें सुन्दर तोरण आसन दिखें वहीं से स्वामी।
समवसरण निज वैभव पाने, हम तो करें नमामि॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिक्षु कंगूरागुरजबैठकसयुक्त चतुर्द्वारसहिते धूलिसालदुग्रेणसंयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥॥

द्वारों से जो गली शिला पर, चार दिशा में सीढ़ी।
तेईस कोस रही जो लंबी, एक कोस की चौढ़ी॥
दोनों तरफ बनी हैं वेदी, जिसके आदि स्वामी।
समवसरण निज वैभव पाने, हम तो करें नमामि॥

ॐ ह्रीं ऋषभदेवस्य क्रोशैकायत-त्रयोविंशति-क्रोशलम्बासु सुसोपानचतुर्गलिषु उभयतः स्फटिकमणिमय-वेदिकासंयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥24॥

वेदी एक धनुष हो चौड़ी, फटिकमणी की प्यारी।
चाप अर्ध शत लेकिन फिर भी, शेष एक सी न्यारी॥
तेईस की क्रमशः हो हानि, जिनके जिनवर स्वामी।
समवसरण निज वैभव पाने, हम तो करें नमामि॥

ॐ ह्रीं अन्तिमत्रयोर्विंशति-तीर्थंकराणाम् यथागमक्रमहीन-वेदिकासंयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥25॥

चउ गलियों के बीच बने हैं, चार दुर्ग(कोट)भी प्यारे।
पाँच वेदियाँ कुल नव होकर, आठ भूमियाँ धारे॥
समवसरण में धूलिसाल की, महिमा कहते स्वामी।
समवसरण निज वैभव पाने, हम तो करें नमामि॥

ॐ ह्रीं चतुर्वीथिकानां मध्ये अन्तरालभूमौ चतुर्णा-दुर्गाणां पंचानां वेदिकानाम् अन्तरालेऽष्टानांभूमि शिलानां पर्यन्ते धूलिशालदुर्गेश्च संयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥26॥

वेदी तथा दुर्ग(कोट)का अंतर, ज्ञानी यों बतलाते।

वेदी है दीवाल सरीखी, दुर्ग उच्च घट जाते॥
चार गुना वेदी सा ऊँचा, केंद्र विराजे स्वामी।
समवसरण निज वैभव पाने, हम तो करें नमामि॥

ॐ ह्रीं जिनदेहाच्चतुर्गुणोच्च-भित्तिकासम-समायाताभिः पंचवेदिकाभिः उपर्युपरि क्रमहीनायामोच्च-दुर्गेश्चसंयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥27॥

पाँच तरह के रत्न रंगमय, वेदी भी मन भाएँ।
मंदिर पर हैं उच्च कँगूरे, जिन पर ध्वज फहराएँ॥
वेदी रचना बनी घनी सी, मंगलमय कल्याणी।
समवसरण निज वैभव पाने, हम तो करें नमामि॥

ॐ ह्रीं कंगूरा मन्दिर ध्वजा सुशोभिताभिः कञ्चनवर्णन पंचवेदिकाभिः संयुक्त समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥28॥

(ज्ञानोदय)

प्रथम चैत्य प्रासाद भूमि है, पहली वेदी यही रही।
और खातिका भूमि दूसरी, दूजी वेदी कही गयी॥
पुष्प वाटिका भूमि तीसरी, कोट दूसरा पहचाना।
चौथी उपवन भूमि फिर तो, तीजी वेदी को माना॥
ध्वजा भूमि पंचम भूमि है, कोट तीसरा मन भाए।
कल्पवृक्ष भूमि है छठवीं, चौथी वेदी कहलाए॥
सप्तम भूमि मंदर भूमि, चौथा कोट सनेहिल है।
अष्टम भूमि सभा भूमि जो, पंचम वेदी झिलमिल है॥

(दोहा)

कोट भूमियाँ वेदियाँ, समवसरण साम्राज्य।
तीर्थंकर हों मध्य में, जिनको नमोऽस्तु आज॥

ॐ ह्रीं पंचवेदिका-चतुर्दुर्गाष्टान्तरालेषु नानाविधनिचित-रचना-संयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥29॥

(लय-भक्ति बेकरार...)

समवसरण सुखकार है, आनन्द अपार है।
तीर्थंकर प्रभु के पद में, नमोऽस्तु बारम्बार है॥
चार कोट पाँचों वेदी में, एक तरफ नौ दरवाजे।
चार दिशाओं के छत्तीस हों, वहाँ केंद्र में जिनराजे॥
समवसरण सुखकार है...

ॐ ह्रीं चतुर्दिक्षु चतुर्दुर्ग-पंचवेदिका-षट्विंशद्-द्वारसंयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय

अर्घ्यं... ॥30॥

प्रथम कोट पहली वेदी के, द्वारों की प्यारी गलियाँ।
जिनके बीच गली भूमि में, भक्तों की दीपावलियाँ॥
समवसरण सुखकार है...

ॐ ह्रीं प्रथमदुर्ग-प्रथमवेदिकाद्वाराणां मध्ये प्रथमवीथिकाभूमि-भिन्नद्वाराणां मध्ये द्वितीयादिवीथिका-भूमिसंयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥31॥

आठ भूमि की आठ गली हैं, फटिक वेदियाँ बगलों में।
जिनके चौखट द्वार चमकते, तीर्थंकर के चरणों में॥
समवसरण सुखकार है...

ॐ ह्रीं अष्टभूमिसम्बन्धिनीनां अष्टवीथिकानाम् उभयपार्श्व अनेकवज्रमय-कपाटयुक्त स्फटिकनिर्मित-वेदिकाद्वारसंयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥32॥

उन भूमि की उन गलियों में, भक्तों का आना जाना।
वहाँ बैठकों के शुभ कलशा, दिखा रहे मुक्ति धामा॥
समवसरण सुखकार है...

ॐ ह्रीं आभ्यन्तरवीथिकाद्वार संयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥33॥

धूलिसाल का कोट मनोहर, जिसमें चार-चार द्वारे।
बड़े सुनहरे झिलमिल-झिलमिल, जिनमें प्रवेश कर जा रे॥
समवसरण सुखकार है...

ॐ ह्रीं स्वर्णमय-चतुर्विंशतिद्वारयुक्त-धूलिशालदुर्गसंयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥34॥

कोट बीच के दो मनहारी, चार वेदियाँ सुन्दर सीं।
द्वार श्वेत चौबीस वहाँ पर, बुला रही हैं अन्दर सीं॥
समवसरण सुखकार है...

ॐ ह्रीं रौप्यमय-चतुर्विंशतिद्वारयुक्त-दुर्गद्वयसंयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥35॥

फटिक कोट के अन्दर देखो, आठ वेदियाँ चौखट हैं।
हरे-हरे हैं कपाट जिनमें, भक्तों की तो आहट हैं॥
समवसरण सुखकार है...

ॐ ह्रीं स्फटिकमय-दुर्गद्वाराभ्यन्तर-वेदिकाष्टद्वार-हरिद्वर्णकपाट संयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥36॥

हैं छत्तीस द्वार प्रभु तन से, बारह गुने ऊँचाई के।
चार गुने चौड़ाई वाले, आतम की सच्चाई के॥
समवसरण सुखकार है...

ॐ ह्रीं श्रीजिनदेहतः द्वादशगुणितोच्च-चतुर्गुणायत-षट्त्रिंशद-द्वारसंयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥37॥

दरवाजों के आजू-बाजू, बनी बैठकें सुन्दर सीं।
कहीं बैठकें ऊपर भी हैं, खंभे जिनके ऊपर भी॥
समवसरण सुखकार है...

ॐ ह्रीं द्वाराणाम् उभयपार्श्वे मुकुटयुक्त-विष्ठरसंयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥38॥

जिन पर छोटी-छोटी गुमठी, जिन पर कलशा ध्वजा चढ़े।
जहाँ बैठकर देव-देवियाँ, जिनगुण गाने आन खड़े॥
समवसरण सुखकार है...

ॐ ह्रीं जिनगुणगायक-देवीदेवविभूषित-क्षुद्रघष्टिकायुक्तानेक गुमठी विशिष्ट द्वारसंयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥39॥

जिनमें रत्नों के तोरण हैं, रत्न पुष्प की मालायें।
झालर घंटों की मालायें, चेतन चित्त चुरा जाए॥
समवसरण सुखकार है...

ॐ ह्रीं विविधरत्नमाल-पुष्पमाल-क्षुद्रघण्टिकापंक्तियुक्त द्वारसंयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥40॥

उन दरवाजों में रत्नों के, जाली के पल्ले शोभें।
जिनमें वृक्षाकार फूल फल, वही देवियाँ मन मोहें॥
समवसरण सुखकार है...

ॐ ह्रीं विविधरचनायुक्त द्वारसंयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥41॥

(मंगलद्रव्य वर्णन) (ज्ञानोदय)

द्वारपाल नव द्वार खड़े हैं, ज्योतिषी डंडा ले त्रय में।
दो में भवनवासि ले मुद्गर, व्यन्तर गुरुज लिए द्वय में॥
कल्पवासि दो द्वार खड़े हैं, गदा धरें गद्गद् होकर।
भक्त पूजते समवसरण में, प्रभु-चरणा प्रभु के होकर॥

ॐ ह्रीं विविधानेक द्वारपालसंयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥42॥

छत्र चमर झारी कलशा ध्वज, वीजन ठोना दर्पण भी।

मंगलद्रव्य यही कहलाते, रहे एक सौ आठ यही॥
एक द्वार पर चार गुने हों, छत्तीस पर कितने होंगे।
पन्द्रह हजार पाँच सौ बावन, आठ द्रव्य कितने होंगे॥

(दोहा)

एक लाख चौबीस हजार, चार सौ सोलह द्रव्य।
प्रभु की मंगलमय सभा, हों मंगलमय भव्य॥

ॐ ह्रीं एकलक्ष-वसुविंशतिसहस्र-चतु:शतषोडश-मङ्गलद्रव्य-विभूषित षट्त्रिंशद्द्वार संयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥43॥

(दोहा)

समवसरण में नवों निधि, होतीं उच्चासीन।
तीर्थंकर प्रभु मध्य में, होते कमलासीन॥
पहली निधि पाण्डु निधि, अन्नसार फल देय।
कालनिधि दूजी निधि, उचित योग्य धन देय॥
महाकाल तीजी निधि, दे बर्तन भंडार।
चौथी निधि मानव निधि, दे आयुध हथियार॥
पद्मनिधि पंचम निधि, करती वस्त्र प्रदान।
छठवीं निधि पिंगल निधि, दे आभूषण दान॥
रत्ननिधि सप्तम निधि, ढोल नगाड़े देय।
शंख निधि अष्टम निधि, भर-भर रत्न लुटेय॥
नेसर्पण नवमीं निधि, देती भवन निवास।
गाड़ी सम निधियाँ खड़ीं, पुण्यफला के पास॥

(ज्ञानोदय)

दरवाजे छत्तीस रहे हैं, जिनके आर-पार निधियाँ।
सदा एक सौ आठ शोभतीं, झलकाती चेतन निधियाँ॥
पन्द्रह हजार पाँच सौ बावन, सेवा में नौ-नौ निधियाँ।
एक लाख उन्तालीस हजार, नौ-नौ अड़सठ कुल निधियाँ॥

(सोरठा)

समवसरण के ईश, नौ निधियों के ईश हैं।
दें हमको आशीष, झुका रहे हम शीश हैं॥

ॐ ह्रीं एकलक्षोन-चत्वारिंशत्सहस्र-नवशताष्टाशीति-निधियुक्त-षट्त्रिंशद्द्वारसंयुक्ते

समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥44॥

(ज्ञानोदय)

दरवाजे छत्तीसी शोभें, रहे चौ गुने अगल-बगल।
हुए एक सौ चवालीस जो, जहाँ रत्न पर्दे झिलमिल॥
जहाँ धूप घट हुए सुगन्धित, मेघ घटा सम उठे धुआँ।
वहीं झूम भौंरे यों कहते, करो कर्म को धुआँ-धुआँ॥

ॐ ह्रीं गगनव्यापक-धूम्रघटायुक्त-द्वारसंयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥45॥

पहली चौथी छठी गली की, अंतर गलियाँ भलीं-भलीं।
जहाँ नृत्य शालाएँ सुन्दर, प्यारी महा विशाल बनीं॥
वहीं नाँचकर देव देवियाँ, जिन महिमा का गान करें।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी, सादर खूब प्रणाम करें॥

ॐ ह्रीं प्रथमतुर्य-षष्ठीवीथिकानाम् अन्तराले नृत्यशालायुक्त-पार्श्वद्वयसंयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥46॥

प्रथम गली के आजू-बाजू, ऊपर खण्ड बने हैं ही।
एक नृत्य शाला में शोभे, हैं बत्तीस अखाड़े भी॥
एक अखाड़े में भी सुन लो, बने धूप घट दो अन्दर।
जहाँ नाचतीं भवनवासिनी, हैं बत्तीस सुरी सुन्दर॥

(दोहा)

अतः एक नृतशाल में, एक हजार चौबीस।
नाँच-नाँच कर देवियाँ, सादर टेकें शीश॥
एक दिशा के चार हों, कुल सोलह नृतशाल।
जिनमें कितनी देवियाँ, गाएँ प्रभु जयमाल॥
सोलह हजार तीन सौ, चौरासी सुरनार।
समवसरण में नमोऽस्तु कर, चलें मुक्ति के द्वार॥

ॐ ह्रीं षोडशनृत्यशालासहित-चतुर्दिशा-चतुर्द्वारिसंयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥47॥

(ज्ञानोदय)

चौथी अंतर महागली की, श्रेष्ठ नृत्यशाला जिसमें।
कल्पवासिनी देवी नाचें, चारों आजू-बाजू में॥
एक हजार चौबीस देवियाँ, एक धाम में यश बाँचें।

छियानवे में सोलह हजार औ, तीन सौ चौरासी नाचें॥

ॐ ह्रीं कल्पवासिनीनृत्ययुक्त-चतुर्थान्तरवीथकायाम् पूर्ववत् नृत्यशालासंयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥48॥

छठवीं अंतर शुद्ध गली के, बगलों की नृतशालाएँ।
हैं बत्तीस जहाँ पर नाचें, ज्योतिष देवी गुण गायें॥
एक हजार चौबीस देवियाँ, हर शाला में नाँच रहीं।
सोलह हजार सात सौ अड़सठ, नमोऽस्तु कर यश वाँच रहीं॥

ॐ ह्रीं द्वात्रिंशत् नृत्यशालयुक्त-षष्ठान्तरवीथिकासंयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥49॥

(दोहा)

चौंसठ नृतशालाओं में, नाँच-नाँच इठलाएँ।
पैंसठ हजार पाँच सौ छत्तीस सुरि गुण गाएँ॥
हम करके स्थापना, प्रभु का वैभव गाएँ।
समवसरण को प्राप्त कर, मोक्षमहल पा जाएँ॥
धूलिसाल का कोट फिर, लखें नैन भर इन्द्र॥
विजय द्वार से जाए कर, पूजे मानस्तंभ॥

ॐ ह्रीं प्रथमचतुर्थमार्गस्थ-अन्तरवीथिकायाम् चतुःषष्ठि नृत्यशाला सहितद्वारसंयुक्ते समवसरणे स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥50॥

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

तीर्थंकर चौबीस के, समवसरण के नाम।
भविगण जयमाला कहें, कर नमोऽस्तु धर ध्यान॥

(ज्ञानोदय)

अंतरंग बहिरंग सम्पदा, तीर्थंकर जिसके स्वामी।
अतः चरण को समवसरण को, हम करते हैं प्रणमामि॥
जिनवर के छ्यालीस मूलगुण, जिनमें चौतीस अतिशय हों।
प्रातिहार्य हो आठ साथ में, प्रभु के चार चतुष्टय हों॥1॥
रुधिर जन्म से श्वेत दुग्ध सम, सुन्दर और सुगंधित तन।
बिना पसीना मल मूत्रों बिन, अनन्तबल मय हों भगवन्॥
वज्रवृषभनाराच संहनन, समचतुरस्र संस्थान रहे।

एक हजार आठ तन लक्षण, जग हितकारी वचन रहें॥2॥
ये दस अतिशय लेकर जन्मे, लेकिन हुए केवली ज्यों।
घातिकर्म को नशा दिया सो, दस अतिशय हो बैठे त्यों॥
सौ गव्यूती सुभिक्षता हो, गमन अधर नभ में ही हो।
चउ विध कवलाहार नहीं हो, किसी जीव का वध ना हो॥3॥
कैसा भी उपसर्ग नहीं हो, चतुर्मुखी प्रभु दर्शन हो।
सब विद्या के ईश्वर बनते, बिन छाया जिन का तन हो
आँखों की पलकें न झपकें, बढ़ते नख वा केश नहीं।
तभी केवली जैसा जग में, सुन लो! दूजा भेष नहीं॥4॥
आओ! आज देवकृत अतिशय, चौदह पूजें पूजन में।
होती अर्द्धमागधी भाषा, मैत्री हो सब जीवन में॥
फूलें फलें साथ सब ऋतुएँ, दर्पण जैसी धरती हो।
जीव परम आनन्द भोगते, पवन सुगंधित बहती हो॥5॥
कीच धूल कण्टक ना उड़ते, रिमझिम गन्धोदक बरसे।
सुर दो सौ पच्चीस कमल भी, रचें सुगंधित सोने से॥
धान्य अठारह विध वाले सब, एक साथ फूलें फल हों।
स्वच्छ साफ नभ मण्डल होता, दसों दिशाएँ निर्मल
हो ॥ 6 ॥
देव गगन में करते जय-जय, धर्म चक्र आगे चलता।
यही देवकृत चौदह अतिशय, पाकर भाग्य कमल खिलता॥
प्रातिहार्य हों आठ उन्हीं में, अशोक तरु दे छाँव घनी।
सिंहासन हो पुष्पवृष्टी हो, मेघनाद सम दिव्य ध्वनि॥7॥
चौसठ चँवर ढुरें प्रभु जी पर, भामण्डल चम्-चम् चमके।
दुन्दुभि बाजे तीन छत्र भी, प्रभु जी के सिर पर दमके॥
अनन्तज्ञान हो अनन्त दर्शन, सुख वा वीर्य अनन्त रहे।
यों छ्यालीस मूलगुणधारी, तीर्थंकर अरिहन्त रहे॥8॥
तीर्थंकर प्रकृति पुण्योदय, हो तो समवसरण लगता।
तीर्थंकर के साथ-साथ में, भाग्य भव्य जन का जगता॥

भाग्य बने सौभाग्य अतः सब, वीतरागता खोज रहे।
भाव-भक्ति से यथाशक्ति से, समवसरण को पूज रहे॥9॥
ऐसे वैभवधारी भगवन्, उच्चासीन अधर में हो।
उन्हें पूजकर पथ वो पाते, जो जन जगत भँवर में हो॥
इसी भावना से हम सबने, समवसरण विस्तारा है।
समवसरण से आत्मवरण हो, यदि सान्निध्य तुम्हारा है॥10॥
गुण छ्यालीस ईश के पाने, शीश शिष्य ने टेका है।
आज नहीं यह सम्भव है सो, चरणों में आ बैठा है॥
बस उदास यह लौट न जाए, अतः जगह दे दो थोड़ी।
'सुव्रत' को भगवान बना के, निज रमणी की दो जोड़ी॥11॥

ॐ ह्रीं समवसरण स्थित चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(सोरठा)

निज वैभव के साथ, समवसरण में इन्द्र जा।
टेक रहा निज माथ, पाने धाम जिनेन्द्र का।

(पुष्पांजलिं...)

चतुर्दिशा मानस्तंभ जिनबिम्ब पूजन

(दोहा)

चतुर दिशा में जाए के, पूजे मानस्तंभ।
त्रय प्रदक्षिणा इन्द्र दे, ले जिनेन्द्र अवलंब॥

(विष्णु)

धूलिसाल के पूर्ण कोट में, चार-द्वार मिलते।
मानस्तंभ बिम्ब दर्शन कर, हृदय कमल खिलते॥
पूजन करने द्रव्य संजो कर, मण्डल रचा रहे।
मनमंदिर में नाथ पधारो, पूजक बुला रहे॥
अगर आप ना आओगे तो, कैसे मान गले।
ना जग में सम्मान मिलेगा, ना निज ध्यान लगे॥
अतः मान रख लो भक्तों का, मान विजेता जी।
हम नमोऽस्तु कर बन जाएंगे, मान विजेता भी॥

(सोरठा)

मान जयी को मान, मान जयी हम भक्त हों।
कर नमोऽस्तु आह्वान, पूजन में अनुरक्त हों॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिशि मानस्तम्भस्थित-जिनबिम्बसमूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो...। (पुष्पांजलिं...)

(विष्णु)

पाप भोग की इच्छाएँ जब, त्यागे बिन मरते।
पुनः जन्म की पुनः मृत्यु की, भव यात्रा करते॥
जन्म मृत्यु का यह इच्छा जल, तजें अर्चना कर।
चारों मानस्तंभ बिम्ब को, भजें नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिशि मानस्तम्भस्थित-जिनबिम्बेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

कषाय जैसा ताप नहीं ना, प्रभु सी शीतलता।
फिर क्यों आतम प्रभु को तज के, कषाय से जलता॥
निज चंदन को कषाय क्रन्दन, तजें अर्चना कर।
चारों मानस्तंभ बिम्ब को, भजें नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिशि मानस्तम्भस्थित-जिनबिम्बेभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

अक्ष यक्ष अध्यक्ष कोई भी, आतम धन ना दें।
पर इनके कारण संसारी, अपनी सुध ना लें॥
जिन पद पाने जगत पदों को, तजें अर्चना कर।
चारों मानस्तंभ बिम्ब को, भजें नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिशि मानस्तम्भस्थित-जिनबिम्बेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

फूल विनय की फुलवारी सो, प्रभु की छाँवों में।
मान शूल के रहे मरुस्थल, चुभते पावों में॥
निजानुभव को काम बाण को, तजें अर्चना कर।
चारों मानस्तंभ बिम्ब को, भजें नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिशि मानस्तम्भस्थित-जिनबिम्बेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

परानन्द के स्वादी जन को, परमानन्द नहीं।
सो भोजन के आदी जन को, भजनानन्द नहीं॥
आत्म भजन को भोजन-पानी, तजें अर्चना कर।
चारों मानस्तंभ बिम्ब को, भजें नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिशि मानस्तम्भस्थित-जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

दीपक से दीपक जलते तो, होते उजयाले।
मानव से मानव जलते तो, होते मुँह काले॥

दीप जलाकर मोह कालिमा, तजें अर्चना कर।
चारों मानस्तंभ बिम्ब को, भजें नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिशि मानस्तम्भस्थित-जिनबिम्बेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

बबूल बोकर गुलाब चाहें, कैसे सम्भव हो।
दुख दाता कर्मों से सुख का, कैसे अनुभव हो॥
धूप चढ़ाकर कर्माश्रित दुख, तजें अर्चना कर।
चारों मानस्तंभ बिम्ब को, भजें नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिशि मानस्तम्भस्थित-जिनबिम्बेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

धरती से चलकर अम्बर तक, फल यात्रा करते।
ऐसे ही प्रभु चरणों में झुक, भक्त मोक्ष वरते॥
फल अर्पित कर पतन राह को, तजें अर्चना कर।
चारों मानस्तंभ बिम्ब को, भजें नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिशि मानस्तम्भस्थित-जिनबिम्बेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

पूर्व दिशा उत्साह भरे तो, सब खुशहाल हुए।
समवसरण के पूर्व द्वार से, मालामाल हुए॥
अर्घ्य चढ़ाकर विघ्न अमंगल, तजें अर्चना कर।
चारों मानस्तंभ बिम्ब को, भजें नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिशि मानस्तम्भस्थित-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

जिसने जो कुछ चाहा उसको, वह वरदान मिले।
हमको केवल समवसरण में, कुछ स्थान मिले॥
अन्दर बाहर की सम्पत्ति, मिले अर्चना कर।
चारों मानस्तंभ बिम्ब को, भजें नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिशि मानस्तम्भस्थित-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

पूर्वदिशामानस्तम्भ जिनबिम्ब अर्घ्य

(हरिगीतिका)

पूरव दिशा में जाए सुरपति, विजय नामक द्वार से।
परिकोट धूलीसाल अन्दर, दे प्रदक्षिण चाव से॥
फिर बिम्ब मानस्तंभ पूजें, स्वर्ग के सुख छोड़ के।
हम अर्घ्य भेंटें कर नमोऽस्तु, शीश सादर मोड़ के॥

ॐ ह्रीं पूर्वदिशि मानस्तम्भस्थित-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं... ॥1॥

दक्षिणदिशामानस्तम्भ जिनबिम्ब अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

दक्षिण दिशा इन्द्र फिर जाकर, वैजयंत को पार करें।
मानस्तंभ बिम्ब को पूजें, प्रदक्षिणा सत्कार करें॥
करके हम पूजा स्थापन, मान कषायों को हर लें।
अर्घ्य भेंट कर करें नमोऽस्तु, समवसरण से मोक्ष चलें॥

ॐ ह्रीं दक्षिणदिशि मानस्तम्भस्थित-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं... ॥2॥

पश्चिमदिशामानस्तम्भ जिनबिम्ब अर्घ्य

(अडिल्ल)

इन्द्र चला फिर पश्चिम जयंत द्वार से।
मानस्तंभ भजें सादर सत्कार से॥
समवसरण से दुख अज्ञान समाप्त हों।
अतः नमोऽस्तु करके पूजें भक्त हो॥

ॐ ह्रीं पश्चिमदिशि मानस्तम्भस्थित-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं... ॥3॥

उत्तरदिशामानस्तम्भ जिनबिम्ब अर्घ्य

(विष्णु)

उत्तर दिशा द्वार अपराजित, इन्द्र पार करके।
मानस्तंभ बिम्ब को पूजे, परिक्रमा करके॥
इन्द्रों सा वैभव ना लेकिन, फिर भी पूज रहे।
परमातम के पद में अपनी, आतम खोज रहे॥

ॐ ह्रीं उत्तरदिशि मानस्तम्भस्थित-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं... ॥4॥

जयमाला

(दोहा)

चउ दिशि के हम पूजकर, मानस्तंभ महान।
करके नमोऽस्तु अब कहें, जयमाला गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो! मानस्तंभ की, जय हो! जय हो! बिम्बों की।
जय हो! जय हो! जिनशासन के, शुद्धातम प्रतिबिम्बों की॥
इनकी कथा व्यथा को हरती, अर्चा चर्चा निज की दे।
अतः निरंतर मानस्तंभ की, भक्ति अर्चना कर लीजे ॥1॥

प्रथम गली में चार द्वार हैं, तथा तीन परिकोट कटन।
इन कोटों पर ध्वज लहराएँ, बीच-बीच में हैं भू-वन॥
जिनमें कोयल कुहु-कुहु बोलें, तोता मैना शोर करें।
बीच-बीच में नगर बसे जो, आकर्षित निज ओर करें ॥2॥
तीन पीठ तीजे कोटे पर, त्रय कटनी भी चमक रहीं।
जो वैडूर्य आदि मणियों की, झिलमिल-झिलमिल दमक रहीं॥
ऋषभनाथ की तीनों कटनी, चार धनुष की ऊँची थीं।
शेष रही तेईस जिनों की, क्रमशः-क्रमशः कमती थीं ॥3॥
पीठ तीसरी कटनी वाली, एक हजार धनुष चौड़ी।
जिस पर मानस्तंभ सुशोभित, जिसकी कथा कहें थोड़ी॥
मानी जन निज मान छोड़कर, अपना शीश नमाते हैं।
तब ही मानस्तंभ नाम यह, सार्थक संज्ञा पाते हैं ॥4॥
दो कम एक हजार धनुष के, चौड़ाई वाले रहते।
छह हजार धनुष हों ऊँचे, बारह योजन से दिखते॥
जिनके चारों ओर वापियाँ, भरी लबालब जल से हों।
सजी धरा ज्यों नयना खोले, उनमें खिले कमल से यों ॥5॥
इन कमलों पर भौंरे गूँजे, आँखों में काजल ज्यों हो।
चार दिशा में सोलह वापी, नन्दोत्तर आदिक जो हो॥
जिनमें मणिमय बनीं सीढ़ियाँ, जिन में हंस किलोल करें।
इक वापी के निकट सुनहरे, बने कुण्ड दो चित्त हरें ॥6॥
भरे हुए जो उज्ज्वल जल से, जिनमें भक्त पैर धोकर।
समवसरण में प्रभु की पूजा, करने जाते खुश होकर॥
इस विध सोलह बनी वापियाँ, कुल बत्तीस कुण्ड न्यारे।
पूरव का यह पूरण वर्णन, कौन कहे पूरा प्यारे ॥7॥
पूरव जैसा दक्षिण पश्चिम, उत्तर का भी वैभव हो।
जिसके कुछ-कुछ गुण गाकर हम, चाह रहे दुख का क्षय हो॥
क्योंकि हमने यही सुना कि, समवसरण के ज्ञानी जी।
सबकी इच्छा पूरी करते, दीक्षा देकर स्वामी जी ॥8॥

समवसरण में मिले न जब तक, हम भक्तों को डेरा रे।
तब तक भक्तों के दिल में प्रभु, डाले रहना डेरा रे॥
दिल में डेरा डला रहे तो, कट जाए भव फेरा रे।
सो नमोऽस्तु कर मुनि 'सुव्रत' के, प्रभु को टेरा हेरा रे ॥9॥

(सोरठ)

भजकर मानस्तंभ, इन्द्र करें जिन अर्चना।
हम पूजें जिन बिम्ब, प्रभु से करते प्रार्थना॥
पाएँ निजी मुकाम, प्राप्त हुआ ज्यों आपको।
यही मिले वरदान, जीत सकें हर पाप को॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिशि मानस्तम्भस्थित-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(हरिगीतिका)

जो भक्त मानस्तंभ पूजा, कर खुशी से नाँचते।
वे रोग भय दुख शोक आदिक, शीघ्र अपने नाशते॥
अब और क्या ज्यादा कहें वे, कर्म हर कर सिद्ध हों।
सो भावना 'सुव्रत' करें ये, नित्य प्रभु सान्निध्य हों॥

(पुष्पांजलिं...)

चैत्यभूमि जिनबिम्ब पूजा

(दोहा)

मानस्तंभ को पूजकर, चैत्य भूमि प्रासाद।
जिन बिम्बों को नमोऽस्तु हो, पाने आशीर्वाद॥

(वीर या मात्रिक सवैया)

चार दिशा में मानस्तंभ हैं, पर आग्नेय तथा नैऋत्य।
वायव्य व ईशान दिशा में, हैं मंदिर भूमि जिन चैत्य॥
पृथक्-पृथक् वा साथ-साथ में, हृदय कमल पर जिन्हें विराज।
यही भावना बना रहे हम, आत्म शान्ति दो हे! जिनराज॥

(सोरठ)

पूजा को विस्तार, हम आह्वानन अब करें।
सुन लो नाथ पुकार, यही निवेदन सब करें॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिशासम्बन्धि चैत्यभूमिमन्दिरस्थ-जिनबिम्बसमूह अत्र अवतर-अवतर...।
अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो...। (पुष्पांजलिं...)

जन्म मरण जैसी इच्छाएँ, हो सकतीं जो कभी न पूर्ण।
फिर भी पूरी करने चेतन, रही लाख चौरासी घूम॥
चौरासी में ना घुमें सो, समवसरण में दे जल धार।
चैत्य भूमि के बिम्ब भजें हम, करके नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिशासम्बन्धि चैत्यभूमिमन्दिरस्थ-जिनबिम्बेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

चंदन से पुद्गल शीतल हो, फिर भी किया समर्पित आज।
चंदन सी चेतन शीतल हो, अतः पूजते हम जिनराज॥
आत्मशान्ति पाने हम देते, समवसरण में चंदन धार।
चैत्य भूमि के बिम्ब भजें हम, करके नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिशासम्बन्धि चैत्यभूमिमन्दिरस्थ-जिनबिम्बेभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

चंदन के पीछे अक्षत का, क्रम क्यों आया करो विचार।
आग बुझे तो थिर हों वर्ना, भागमभाग रहे हर द्वार॥
सो स्थिरता पाने लाँये, समवसरण में पुंज सँवार।
चैत्य भूमि के बिम्ब भजें हम, करके नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिशासम्बन्धि चैत्यभूमिमन्दिरस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

आतम के हर प्रदेश हम तो, फूल बना कर करें पुकार।
प्रभु! उद्धार हमारा करने, भक्त हृदय में करें विहार॥
काम शूल को हरने लाए, समवसरण में पुष्प बहार।
चैत्य भूमि के बिम्ब भजें हम, करके नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिशासम्बन्धि चैत्यभूमिमन्दिरस्थ-जिनबिम्बेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

जल आहार पहाड़ चढ़ा दे, ऐसा माने यह संसार।
धर्म कहे इनके त्यागी जन, दुनियाँ से हो जाते पार॥
अतः भेंट नैवेद्य करें हम, समवसरण का पाने सार।
चैत्य भूमि के बिम्ब भजें हम, करके नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिशासम्बन्धि चैत्यभूमिमन्दिरस्थ-जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

इन अज्ञान घटाओं को बस, तितर-बितर कर सकते आप।

आप बिना अज्ञान अंध में, गुमे भक्त हैं करके पाप॥
तुम्हें मनाने दीप जलाएँ, समवसरण का पूजें द्वार।
चैत्य भूमि के बिम्ब भजें हम, करके नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिशासम्बन्धि चैत्यभूमिमन्दिरस्थ-जिनबिम्बेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

रागी बनके वित्तराग कर, कर्म बाँधते जग के लोग।
चले विरागी कर्म काटने, अतः धूप से पूजन योग्य।
हमें वीतरागी बनना सो, समवसरण को रहे निहार॥
चैत्य भूमि के बिम्ब भजें हम, करके नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिशासम्बन्धि चैत्यभूमिमन्दिरस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

वरमाला के फल से देखो, चलता है दुखिया संसार।
जयमाला के फल से देखो, खुले मोक्ष मंजिल का द्वार॥
मिले मोक्षफल सो हम लाएँ, समवसरण में फल रसदार।
चैत्य भूमि के बिम्ब भजें हम, करके नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिशासम्बन्धि चैत्यभूमिमन्दिरस्थ-जिनबिम्बेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हमने भावुकता से स्वामी, अर्घ्य बनाया रख श्रद्धान।
बिना आपकी अनुकम्पा के, किसका हुआ यहाँ कल्याण॥
अतः सँभालो हम भक्तों को, आप बिना दुनियाँ निस्सार।
चैत्य भूमि के बिम्ब भजें हम, करके नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिशासम्बन्धि चैत्यभूमिमन्दिरस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

पूजा का फल हम यह चाहें, हृदय हमारे रहना आप।
जो होगा सो अच्छा होगा, अपने आप कटेंगे पाप॥
इसी भाव से आ धमके हम, सुनो! नाथ! अब भक्त पुकार।
चैत्य भूमि के बिम्ब भजें हम, करके नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिशासम्बन्धि चैत्यभूमिमन्दिरस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

प्रथम चैत्यप्रासाद भूमि अर्घ्य

(विष्णु)

प्रथम भूमि की गली जहाँ पर, मानस्तंभ रहे।
अंतर गलियों के पार्श्वों में, सुन्दर बिम्ब रहे॥
जिन चैत्यों ने चित्त चुराया, अब क्या बात करें।
जिन चरणों को करके नमोऽस्तु, हम तो माथ धरें॥

ॐ ह्रीं प्रथमगलीद्वारोभय-पार्श्वमार्गे अन्तर्गलीमध्ये चैत्य मन्दिरस्थ जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥1॥

प्रथम कोट की प्रथम वेदिका, दो-दो भागी हैं।
जहाँ बीच में चैत्य भूमि जो, बाईस भागी हैं॥
जिन चैत्यों ने चित्त चुराया, अब क्या बात करें।
जिन चरणों को करके नमोऽस्तु, हम तो माथ धरें॥

ॐ ह्रीं सालवेदी चैत्यमन्दिरभूमिवलयव्याससंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥2॥

आग्नेय आदि विदिशाओं के, चार बने मंदिर।
पंचम बना केंद्र में हम भी, पूजें जिन मंदिर॥
जिन चैत्यों ने चित्त चुराया, अब क्या बात करें।
जिन चरणों को करके नमोऽस्तु, हम तो माथ धरें॥

ॐ ह्रीं चतुर्विदिशासु पंचपंचमन्दिरमध्य-जिनमन्दिरसंयुक्ते समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥3॥

चैत्यभूमि को जान समझकर, वलय व्यास हम समझें।
वायव भाग समझकर पूजें, जग में ना उलझें॥
जिन चैत्यों ने चित्त चुराया, अब क्या बात करें।
जिन चरणों को करके नमोऽस्तु, हम तो माथ धरें॥

ॐ ह्रीं वायव्यदिशायां बलयव्यासंयुक्त-चैत्यभूमिसंयुक्ते समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥4॥

चैत्य भूमियों में जिन मंदिर, कृतियाँ नभ चूमें।
जहाँ बावड़ी ताल आदि में, देव मनुज झूमें॥
जिन चैत्यों ने चित्त चुराया, अब क्या बात करें।
जिन चरणों को करके नमोऽस्तु, हम तो माथ धरें॥

ॐ ह्रीं सरोवरवापिका-तालवृक्षयुक्त-चैत्यभूमिमन्दिरसंयुक्ते समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥5॥

बनीं सीढ़ियाँ जिनके अन्दर, नयनों को शोभें।

ऊपर बनीं बैठकें सुन्दर, सबका मन मोहें॥
जिन चैत्यों ने चित्त चुराया, अब क्या बात करें।
जिन चरणों को करके नमोऽस्तु, हम तो माथ धरें॥

ॐ ह्रीं चैत्यभूमिसरोवरवापिका-सोपानविष्ठरसंयुक्ते समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥6॥

वापी के चारों कोनों में, खम्भे चार लगे।
जिन पर छतरी कलश ध्वजाएँ, ताल मृदंग बजे॥
जिन चैत्यों ने चित्त चुराया, अब क्या बात करें।
जिन चरणों को करके नमोऽस्तु, हम तो माथ धरें॥

ॐ ह्रीं वापिकायाः कोणस्थस्तम्भेषु शिखरध्वजाकलशयुक्त चैत्यमन्दिरस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥7॥

चैत्य भूमियों में वृक्षों की, लगी श्रेणियाँ हैं।
वार्षिक फल फूलों को पा के, हम भी बढ़ियाँ हैं॥
जिन चैत्यों ने चित्त चुराया, अब क्या बात करें।
जिन चरणों को करके नमोऽस्तु, हम तो माथ धरें॥

ॐ ह्रीं षड्ऋतुफलपुष्पयुक्त-श्रेणीबद्धचैत्यमन्दिरस्थ जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥8॥

वृक्षों की शाखाएँ सुन्दर, झुक-झुक नाच रहीं।
एसी लगती तीर्थंकर के, यश को वाँच रहीं॥
जिन चैत्यों ने चित्त चुराया, अब क्या बात करें।
जिन चरणों को करके नमोऽस्तु, हम तो माथ धरें॥

ॐ ह्रीं अनेकशाखासहित वृक्षशोभितभूमि चैत्यमन्दिरस्थ जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥9॥

वृक्ष तले हैं चन्द्रकान्त की, चन्द्र शिलाएँ सीं।
जिन पर मुनिजन जिन बिम्बों के, सहित विराजें जी॥
जिन चैत्यों ने चित्त चुराया, अब क्या बात करें।
जिन चरणों को करके नमोऽस्तु, हम तो माथ धरें॥

ॐ ह्रीं चैत्यभूमि वृक्षतलेषु अनेकशिलासु दिगम्बरमुनिसमूह सहित चैत्यमन्दिरस्थ जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥10॥

मुनि मुद्राएँ दया मूर्ति हैं, परम उदासी हों।
पूज्य विरागी भव सुख त्यागी, जिन संन्यासी हों॥
जिन चैत्यों ने चित्त चुराया, अब क्या बात करें।
जिन चरणों को करके नमोऽस्तु, हम तो माथ धरें॥

ॐ ह्रीं चैत्यभूमि दिगम्बरमुनिसंयुक्त चैत्यमन्दिरस्थ जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥11॥

इन्हीं शिला पर मुनि मुद्राएँ, आतम ध्यान करें।
भव्य जनों को तत्त्व धर्म दे, जग कल्याण करें॥
जिन चैत्यों ने चित्त चुराया, अब क्या बात करें।
जिन चरणों को करके नमोऽस्तु, हम तो माथ धरें॥

ॐ ह्रीं चैत्यभूमिशिलासु-द्विविधधर्मोपदेशक-दिगम्बरयतिसंयुक्त चैत्यमन्दिरस्थ जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥12॥

इन्हीं शिलाओं पर मुनि जन तो, करें कर्म क्षय हो।
'सुव्रत' जिन्हें नमोऽस्तु करके, बोल रहे जय हो॥
जिन चैत्यों ने चित्त चुराया, अब क्या बात करें।
जिन चरणों को करके नमोऽस्तु, हम तो माथ धरें॥

ॐ ह्रीं चैत्यभूमिकर्मविध्वंसक दिगम्बरयतिसंयुक्त चैत्यमन्दिरस्थ जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥13॥

पाँच मंदिरों की शोभाएँ, कौन कहे उनको।
बंधन-बारे तोरण-द्वारे, मोहें हर जन को॥
जिन चैत्यों ने चित्त चुराया, अब क्या बात करें।
जिन चरणों को करके नमोऽस्तु, हम तो माथ धरें॥

ॐ ह्रीं अनेकशोभासंयुक्त चैत्यभूमिस्थ पंचमन्दिरस्थ जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥14॥

पाँचों मंदिर की रचनाएँ, स्वर्गों से सुन्दर।
भक्त पहुँच जाते हैं अन्दर, आओ तो अन्दर॥
जिन चैत्यों ने चित्त चुराया, अब क्या बात करें।
जिन चरणों को करके नमोऽस्तु, हम तो माथ धरें॥

ॐ ह्रीं अनेकरचनासंयुक्त चैत्यभूमिमन्दिरस्थ जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥15॥

द्वितीय खातिका भूमि अर्घ्य

(अर्धविष्णु)

दूजी गली के आजू-बाजू, अंतर गलियाँ रे।
द्वारे भीतर भरी नीर से, भूमि खातिका रे॥

ॐ ह्रीं मार्गे वामदक्षिणपार्श्वे अन्तर्गलिमध्ये द्वितीयखातिकाभूमिसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥1॥

इसी भूमि के वलय व्यास तो, बाईस भाग रहे।
खाई रत्नजड़ित है जिनकी, शोभा वाँच रहे॥

ॐ ह्रीं द्वाविंशतिभागबलय व्यासयुक्त द्वितीयखातिकाभूमि-रत्नसोपानसंयुक्त समवसरण-स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥2॥

भूमि खातिका भरी नीर से, जहाँ वेदियाँ दो।
सुन्दर न्यारी जिनकी परिधि, महाद्वारमय वो॥

ॐ ह्रीं प्रथमद्वितीयपरिधौ-अनेकलघुद्वारसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥3॥

छोटे छोटे द्वारे भी हो, गुमठी हो उन पर।
जिन पर कलशा ध्वजा शोभते, हमें नाज जिन पर॥

ॐ ह्रीं लघुद्वारे सकलशतक्षुद्र गुमठीसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥4॥

छोटे दरवाजों के आगे, बना भूमि पर पुल।
रत्न जड़ित है बड़ा मनोहर, उज्ज्वल से उज्ज्वल॥

ॐ ह्रीं लघुद्वारागे रत्नखचितसेतयुक्त खातिकासंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥5॥

पुल के आगे इसी भूमि पर, बने धाम मंदिर।
वहीं लगी है गन्धकुटी जो, बुला रही अन्दर॥

ॐ ह्रीं चैत्यभूमेः अग्रे वेदिकालघुद्वारसेतुमार्गेभ्यः गंधकुट्याः भूमिपर्यन्त सुगममार्गसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥6॥

दूजी वेदी दरवाजे से, निकल रहे सुर नर।
अंतर गली से गन्धकुटी में, जा पूजें जिनवर॥

ॐ ह्रीं द्वितीयवेदिकाद्वारमध्यतः गंधकुटीपर्यन्त-सुगममार्गसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥7॥

पुल के ऊपर बनीं बैठकें, दोनों ओर जहाँ।
जिन पर गुमठी कलश ध्वजाएँ, लहरा रही वहाँ॥

ॐ ह्रीं सेतोः उपरि उभयपार्श्व कलशध्वजाबहुशिखरयुक्त-बहुविष्ठरसंयुक्त समवसरण-स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥8॥

सायवान के नीचे परदे, तरह-तरह लटके।
जहाँ बैठकर जल में झाँके, दिखता कुछ हटके॥

ॐ ह्रीं सेतोः उपरि अनेकविष्ठरसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥9॥

क्षीर सिन्धु के जल से जैसे, खाई भरी गहरी।
जहाँ बड़ी छोटी नौकाएँ, आकर के ठहरी॥

ॐ ह्रीं अनेकलघुविशालनौकासंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥10॥

बने उन्हीं पर बंगला जिन पर, छतरी शोभ रही।
हाथी घोड़ा सिंह आदि के, मुख हैं रत्नमयी॥

ॐ ह्रीं यवनिशोभाशोभितानेकनौकासंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥11॥

इन नावों में सुर विद्याधर, नाच बजा गाए
हम भी इनका सुमिरन करने, समवसरण आए॥

ॐ ह्रीं जिनगुणायकदेव-विद्याधरयुक्तनौकासंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥12॥

इन नावों में देव देवियाँ, नौकायन करते।
पुण्य कमाकर भव्य जीव भी, मौका मन धरते॥

ॐ ह्रीं खातिकासु अतिशीघ्रगामिनौकासंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥13॥

यहीं नाचकर गाज बजाकर, संचय पुण्य करें।
'सुव्रत' प्रभु की गाथा कह के, जीवन धन्य करें॥

ॐ ह्रीं अनेकातिशययुक्त पुण्यसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥14॥

तृतीय लता (पुष्पवाटिका) भूमि अर्घ्य (चौपाई)

तीजी भूमि गली बगलों में, अंतर गली द्वार भीतर में।
दूजी वेदी है चउ-भागी, करें नमोऽस्तु हम बड़भागी॥

ॐ ह्रीं तृतीयभूमिद्वारे वामदक्षिणान्तरर्गलीषु चतुर्थभागप्रमाण द्वितीयवेदिकासंयुक्ते समवसरण-स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥1॥

कोट दूसरा चार भाग का, विदिशा में सौभाग्य जागता।
लता भूमि एसी जिन रागी, करें नमोऽस्तु हम बड़भागी॥

ॐ ह्रीं तृतीयभूमि चतुर्थभाग-द्वितीयसालसंयुक्ते समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥2॥

भूमि कोट अरु वलय व्यास जो, चवालीस के पूर्ण भाग वो।
जहाँ बनीं नाना फुलवाड़ी, करें नमोऽस्तु हम बड़भागी॥

ॐ ह्रीं तृतीयभूमौ चत्वारिंशद्भाग-बलयव्यासपुष्पवाटिकासंयुक्ते समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥3॥

इतनी ही फुलवाड़ी बढ़ियाँ, जहाँ गन्ध भौरों की लड़ियाँ।
नाच रहे विषयों के रागी, करें नमोऽस्तु हम बड़भागी॥

ॐ ह्रीं तृतीयभूमौ चत्वारिंशद्भाग-पुष्पवाटिकासंयुक्ते समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥4॥

एसी पुष्प भूमि के अन्दर, अंतर गली द्वार हैं सुन्दर।
उसके आगे है भू-भागी, करें नमोऽस्तु हम बड़भागी॥

ॐ ह्रीं तृतीयभूमौ अन्तर्गल्याः द्वाराग्रे-रम्यभूमिसंयुक्ते समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥5॥

चार दिशा द्वारे ध्वज कलशे, हैं सोपान गोख सुन्दर से॥
फिर भी लगन प्रभु से लागी, करें नमोऽस्तु हम बड़भागी॥

ॐ ह्रीं तृतीयभूमौ पुष्पवाटिका-चतुर्दिक्षु अनेकरचनायुक्त-चतुर्द्वारसंयुक्ते अंतरगल्याः द्वादशद्वारीसंयुक्ते समवसरण-स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥6॥

एक गोख के खंभ चार हैं, सुन्दर मण्डप गन्ध दार है।
जहाँ भव्य भौंरे निज-रागी, करें नमोऽस्तु हम बड़भागी॥

ॐ ह्रीं अनेकप्रकोष्ठयुक्ते तृतीयभूमिपुष्पवाटिका-मण्डपसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥7॥

चारों ओर बनी हैं क्यारी, कल्पवृक्ष की हैं फुलवारी।
रंग बिरंगे पुष्प गुलाबी, करें नमोऽस्तु हम बड़भागी॥

ॐ ह्रीं तृतीयभूमौ खचितसीमा-अनेकपुष्पयुक्त-पुष्पवाटिकासंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥8॥

उत्तम फूल महक कर न्यारे, दशों दिशा महकाते प्यारे।
सुर क्रीड़ा हो वहाँ सरागी, करें नमोऽस्तु हम बड़भागी॥

ॐ ह्रीं तृतीयभूमौ देवादि क्रीड़ायुक्त पुष्पवाटिकासंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥9॥

सीमा तट पर अगल-बगल में, श्रेणीबद्ध लगे तरु-तल में।
बने बीच बंगला बेदागी, करें नमोऽस्तु हम बड़भागी॥

ॐ ह्रीं तृतीयभूमौ सीमायाः श्रेणीबद्ध कदलीआदि अनेकवृक्षफलपुष्पसंयुक्त समवसरण-स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥10॥

चारों विदिशा में सीमा पर, भरी वापिका बैठक झालर।
चरण पखारी भरी विरागी, करें नमोऽस्तु हम बड़भागी॥

ॐ ह्रीं तृतीयभूमौ सीमाचतुर्विदिशासु वापिकासरोवरसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥11॥

निकट वृक्ष तल बनीं शिलाएँ, जहाँ श्रवण मुनि धर्म बताएँ।
पाएँ मोक्ष बने सुख भागी, करें नमोऽस्तु हम बड़भागी॥

ॐ ह्रीं तृतीयभूमौ वापिकाप्रमुखस्थल-विराजित दिगम्बरमुनिसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥12॥

बंगलों पर रत्नों की माला, चन्द्रकान्त की शिला विशाला।
जहाँ ध्यान मुनि करें विरागी, करें नमोऽस्तु हम बड़भागी॥

ॐ ह्रीं तृतीयभूमौ धर्मोपदेशकयतियुक्त-मनोहरप्रकोष्ठसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥13॥

भीतर विद्याधर सुर नाँचें, जिनदर्शन कर यश भी वाँचें।
आस-पास मण्डप फुलवाड़ी, करें नमोऽस्तु हम बड़भागी॥

ॐ ह्रीं तृतीयभूमौ देवीदेवनृत्यक्रीड़ायुक्त अनेकरचनासंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥14॥

चतुर्थ उपवन भूमि अर्घ्य

(चौपाई)

चौथी गली के दाएँ-बाएँ, अंतर गलियाँ चित्त चुराएँ।
बनीं नाट्यशाला शुभ भागी, करें नमोऽस्तु हम बड़भागी॥

ॐ ह्रीं चतुर्थवीथिकायां वामदक्षिणान्तरवीथिका-द्वारसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥1॥

देव नाट्यशाला में नाचें, हैं बत्तीस अखाड़े साँचे॥
एक नाट्यशाला के भागी, करें नमोऽस्तु हम बड़भागी॥

ॐ ह्रीं चतुर्थभूमौ सुभगनाट्शालासंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥2॥

एक अखाड़ा बत्तीस देवी, दूजा कोट तीसरी वेदी।
जो है पूर्ण चार सौ भागी, करें नमोऽस्तु हम बड़भागी॥

ॐ ह्रीं चतुर्थभूमौ तुर्यभागप्रमाण-द्वितीयदुर्ग-तृतीयवेदिकासंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥3॥

चौथी उपवन भूमि खास ये, भाग चवालीस वलय व्यास के।
रागी दुखी-सुखी वैरागी, करें नमोऽस्तु हम बड़भागी॥

ॐ ह्रीं चतुर्थभूमौ द्वितीयदुर्ग-तृतीयदिका-चत्वारिंशद्भागोपवनसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥4॥

आग्नेय में है अशोक तरुवन, नैऋत्य में हैं सप्तपर्ण वन।
घूमें हम वन बन वैरागी, करें नमोऽस्तु हम बड़भागी॥

ॐ ह्रीं चतुर्थभूमौ आग्नेयदिशि-अशोकवने नैऋत्यदिशि-सप्तपर्णवनेनसंयुक्त समवसरण-स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥5॥

है वायव्य दिशा चम्पक वन, ईशानी में रहा आम्रवन।
घने-घने हैं वृक्ष सुभागी, करें नमोऽस्तु हम बड़भागी॥

ॐ ह्रीं चतुर्थभूमौ वायव्यदिशायां-चम्पकवनेन ईशानदिशायाम् आम्रवनेनसंयुक्त समवसरण-स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥6॥

अनेक जाति के वृक्ष मनोहर, अशोक चम्पक आदि वहीं पर।
क्रीड़ा करते देव सरागी, करें नमोऽस्तु हम बड़भागी॥

ॐ ह्रीं चतुर्थभूमौ अनेकरचनायुक्त चतुर्वनसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥7॥

अशोक वन के मध्य भाग में, निर्मित बारह दरी बैठकें।
जिन पर कलशे ध्वज शुभ भागी, करें नमोऽस्तु हम बड़भागी॥

ॐ ह्रीं चतुर्थभूमौ अशोकवने द्वादशद्वारीसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥8॥

बैठक के जो रहे झरोखे, जिनके पर्दे रत्न अनोखे।
नाँचें सुर विद्याधर रागी, करें नमोऽस्तु हम बड़भागी॥

ॐ ह्रीं चतुर्थभूमौ द्वादशद्वार्या उपरि अनेकरचनायुक्त त्रितलगवाक्षसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥9॥

बारहदरी में चौक बने हैं, तीन कोट वा पीठ बने हैं।
नये-नये चमकें बेदागी, करें नमोऽस्तु हम बड़भागी॥

ॐ ह्रीं चतुर्थभूमौ द्वादशद्वार्या आभ्यन्तरे दुर्गत्रमध्ये पीठत्रयसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥10॥

तीन पीठ के ऊपर प्यारा, अशोक तरु है जग से न्यारा।
प्रभु से ऊँचा बारह भागी, करें नमोऽस्तु हम बड़भागी॥

ॐ ह्रीं चतुर्थभूमौ जिनदेहप्रमाणतः द्वादशगुणोतुङ्गाशोकवृक्षयुक्त पीठत्रयसंयुक्त समवसरण-स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥11॥

अशोक तरु का रूप बताएँ, हीरा जड़ सोना शाखाएँ।
दर्शन बने शोक के त्यागी, करें नमोऽस्तु हम बड़भागी॥

ॐ ह्रीं चतुर्थभूमौ विविधशोभयुक्ताशोकवृक्षसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥12॥

पन्ना मणि के पत्र गुच्छ हैं, मरकतमणि के लाल पुष्प हैं।
फल को पाने इच्छा जागी, करें नमोऽस्तु हम बड़भागी॥

ॐ ह्रीं चतुर्थभूमौ विविधशोभायुक्ताशोकवृक्षसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥13॥

चार महावन भूप वृक्ष जो, पाप हरें दें सदा सौख्य वो।
इन्हें पूजते देव सरागी, करें नमोऽस्तु हम बड़भागी॥

ॐ ह्रीं चतुर्थभूमौ चतुर्वनेषु चतुर्भूपवृक्षशोभायुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥14॥

चतुर्वृक्ष जिनबिम्ब पूजा

(दोहा)

उपवन भूमि जाए के, चतुर्वृक्ष जिन चैत्य।
इन्द्र भजें साक्षात् हम, करें नमोऽस्तु भक्त॥

(शुद्धगीता)

जहाँ संसार के वैभव, चरण में शीश धरते हैं।

जहाँ ज्ञानी तथा ध्यानी,सभी आकर ठहरते हैं॥
सभा वह पुण्य फल वाली, हरे पीड़ा जमाने की।
तभी सादर हुई इच्छा, यहाँ पूजा रचाने की॥

(सोरठा)

हृदय कमल आसीन, अशोकादि तरु बिम्ब कर।
निज में हो लवलीन, हम नमोऽस्तु अविलंब कर॥

ॐ ह्रीं अशोकादिवृक्षस्थ-जिनबिम्बसमूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो...। (पुष्पांजलिं...)

(शुद्धगीता)

करोड़ों देव जल भरके, जहाँ अभिषेक करते हैं।
वहाँ हम अर्चना जल से, सुनो सिर टेक करते हैं॥
जनम मृत्यु करें तुम सम, यही है अर्ज ज्ञानी जी।
नमोऽस्तु कर झुकाते सिर, उठा दो हाथ स्वामी जी॥

ॐ ह्रीं अशोकादिवृक्षस्थ-जिनबिम्बेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

जहाँ मँझधार में रहते, उसे संसार कहते हैं।
जहाँ सब प्यार से रहते, इसे प्रभु द्वार कहते हैं॥
हमें निज प्यार दे देना, यही है अर्ज ज्ञानी जी।
नमोऽस्तु कर झुकाते सिर, उठा दो हाथ स्वामी जी॥

ॐ ह्रीं अशोकादिवृक्षस्थ-जिनबिम्बेभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

अनन्त जब प्रेम होता तो, हृदय भी संत हो जाता।
बने यह देह देवालय, भगत भगवंत हो जाता॥
असीमित प्रेम वह बाँटो, यही है अर्ज ज्ञानी जी।
नमोऽस्तु कर झुकाते सिर, उठा दो हाथ स्वामी जी॥

ॐ ह्रीं अशोकादिवृक्षस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

हमारा शूल सा जीवन, तुम्हारा फूल सा जीवन।
जरा सा आप छू लो तो, बने अनुकूल सा जीवन॥
हमारी थाम लो उँगली, यही है अर्ज ज्ञानी जी।
नमोऽस्तु कर झुकाते सिर, उठा दो हाथ स्वामी जी॥

ॐ ह्रीं अशोकादिवृक्षस्थ-जिनबिम्बेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

हमें पापों ने खा डाला, तुम्हें पुण्यों ने है पाला।

तभी तो तुम चखो निज-रस, हमारे भाग्य में हाला॥
चखा दो बूँद निज-रस की, यही है अर्ज ज्ञानी जी।
नमोऽस्तु कर झुकाते सिर, उठा दो हाथ स्वामी जी॥

ॐ ह्रीं अशोकादिवृक्षस्थ-जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

स्वयं को पा चुके हो तुम, स्वयं को खो चुके हैं हम।
स्वयं को प्राप्त करने को, चरण में आ झुके हैं हम॥
स्वयं की रोशनी दे दो, यही है अर्ज ज्ञानी जी।
नमोऽस्तु कर झुकाते सिर, उठा दो हाथ स्वामी जी॥

ॐ ह्रीं अशोकादिवृक्षस्थ-जिनबिम्बेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

कभी कर्मों को हम ढोते, कभी हम को करम ढोते।
गए तुम भार तज इनका, यहाँ कर्मों से हम रोते॥
बचा लो कर्म से हमको, यही है अर्ज ज्ञानी जी।
नमोऽस्तु कर झुकाते सिर, उठा दो हाथ स्वामी जी॥

ॐ ह्रीं अशोकादिवृक्षस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

फलों से फल मिले जग में, जरूरी यह नहीं होता।
टलें ना कर्म फल अपने, टलें सो मोक्ष ही होता॥
महा फल आप सम पाएँ, यही है अर्ज ज्ञानी जी।
नमोऽस्तु कर झुकाते सिर, उठा दो हाथ स्वामी जी॥

ॐ ह्रीं अशोकादिवृक्षस्थ-जिनबिम्बेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

बनाकर अर्घ्य द्रव्यों का, यही है स्वप्न भक्तों का।
जगत का चक्र बस छूटे, मिले सुख-चक्र सिद्धों का॥
हमें अपनी शरण ले लो, यही है अर्ज ज्ञानी जी।
नमोऽस्तु कर झुकाते सिर, उठा दो हाथ स्वामी जी॥

ॐ ह्रीं अशोकादिवृक्षस्थजिनबिम्बेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

(पूर्णार्घ्य)

जगत की कामनाओं में, भुलाया आपको हमने।
तभी तो गुम गए जग में, किया इस पाप को हमने॥
क्षमा कर भक्त स्वीकारो, यही है अर्ज ज्ञानी जी।
नमोऽस्तु कर झुकाते सिर, उठा दो हाथ स्वामी जी॥

ॐ ह्रीं अशोकादिवृक्षस्थजिनबिम्बेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

अशोकादि-चतुर्वन-वृक्षस्थ-जिनचैत्य-अर्घ्य

अशोक वन वृक्ष जिन चैत्य अर्घ्य

(सुविधा छंद 16,8)

अशोक तरु आग्नेय दिशा में छटा बिखेरे।
वृक्षों का वन वृक्ष राज हर शोक हरे रे ॥
जिनकी छाया से संसारी माया हरते।
सो भक्तों के वर्ग अर्घ्य ले नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं आग्नेयदिशि अशोकवृक्षस्थजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥1॥

सप्तपर्णवन वृक्ष जिनचैत्य अर्घ्य

सप्तपर्ण नैऋत्य दिशा में तरुवन शोभें।
जिनके चैत्य बिम्ब भज हम भी आतम शोधें॥
जिनकी छाँव फूल फल मन में खुशियाँ भरते।
सो भक्तों के वर्ग अर्घ्य ले नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं नैऋत्यदिशि सप्तपर्णवनवृक्षस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥2॥

चम्पकवन वृक्ष जिनचैत्य अर्घ्य

चम्पक वन वायव्य दिशा में चहक रहे हैं।
जिन-के चैत्य चिदानन्दी सम चमक रहे हैं॥
श्री चैतन्य चमत्कारी दु:ख अपना हरते।
सो भक्तों के वर्ग अर्घ्य ले नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं वायव्यदिशि चम्पकवनवृक्षस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥3॥

आम्रवन वृक्ष जिनचैत्य अर्घ्य

भूप वृक्ष ईशान दिशा में रहे आम्रवन।
जहाँ बने चैत्यों को पूजे,जग के चेतन॥
आतम राम आम रस जैसे, प्रभु गुण झरते।
सो भक्तों के वर्ग अर्घ्य ले नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं ईशानदिशि आम्रवनवृक्षस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥4॥

जयमाला

(दोहा)

चौथी उपवन भूमि के, चारों वृक्ष महान।

तरु-छाँव प्रभु छाँव दे, अतः करें गुणगान॥

(शेर-चाल)

जय जय श्री जिनदेव चैत्य शोभते जहाँ।
हम तो करें नमोऽस्तु धर्म चाहते यहाँ॥
पहला अशोक वृक्ष भूपवृक्ष है उदार।
चारों दिशा में फैली जिसकी शाखा छाँवदार॥1॥
मंदिर बने उन्हीं पर चार तीन पीठ धार।
है गन्धकुटी में सिंहासन रत्नमणि द्वार॥
उस पर बने हैं स्वर्ण कमल बहुत ही न्यारे।
उस पर विराजे चैत्य प्रभु जी हैं हमारे॥2॥
विराजते अरिहन्त देव चारों ओर रे।
फिर प्रातिहार्य आठों बने चित्त-चोर रे॥
परिवार सहित देव आ के करें नृत्य गान।
फिर परिक्रमा लगा-लगा, भजें जिनेन्द्र नाम॥3॥
क्षीरोदधि के नीर से अभिषेक धार दे।
ले न्हवन नीर अपने भाग्य को सँवार ले॥
फिर हाथ जोड़ शीश मोड़ करते नमोऽस्तु।
फिर आगे करे मानस्तंभ की भी जयोस्तु॥4॥
तब देवराज इन्द्र 'जय जिनेन्द्र' गीत गा।
बलदेव चक्रवर्ती आदि पूजें यहाँ आ॥
ज्यों मेघ घटा देख मोर नाँचे झूम-झूम।
त्यों देव चैत्य देख भक्त नाँचे घूम-घूम॥5॥
फिर भी न इन्द्र तृप्त हो सो नैन कर हजार।
टकटकी लगा-लगा प्रभु के पद निहार॥
गुणगान करके नाथ के कमा रहा हैं पुण्य।
हम भक्त करके भावना करेंगे जन्म धन्य॥6॥
ज्यों हो अशोक वृक्ष का वैभव बड़ा विशाल।
त्यों सप्तपर्ण चम्पक अरु आम्र के कमाल॥
वर्णन करेगा कौन पूर्ण भूप वृक्ष के।

फिर भी 'सुव्रत' सुनाएँ गीत चैत्य नाथ के॥7॥
बदले में चाहते विशेष पुण्य आप से।
अरहंत बन के हो विराज नाथ आपसे॥
फिर समवसरण की सभा दिलाए सिद्ध धाम।
निज आत्म विद्या पाने रोज हो तुम्हें प्रणाम॥8॥

(सोरठा)

पूजा कर जयमाल, चौथी भू वाली कही।
बने मुक्ति के लाल, 'सुव्रत' की इच्छा यही॥

ॐ ह्रीं अशोकादिवृक्षस्थजिनबिम्बेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(हरिगीतिका)

जो भक्त तरुवन चैत्य पूजा, कर खुशी से नाँचते।
वे रोग भय दुख शोक आदिक, शीघ्र अपने नाशते॥
अब और क्या ज्यादा कहें वे, कर्म हर कर सिद्ध हों।
सो भावना 'सुव्रत' करें ये, नित्य प्रभु सान्निध्य हों॥

(पुष्पांजलिं...)

पंचम ध्वज भूमि अर्घ्य

(जोगीरासा)

पंचम भू की मुख्य गली के, बगलों में दो गलियाँ।
द्वारे भीतर तीजी वेदी, चार भाग की बढ़ियाँ॥
चार भाग का कोट तीसरा, ध्वजा भूमि यह न्यारी।
समवसरण के जिन बिम्बों को, नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं पंचमगल्यां वामदक्षिणभागयोः आभ्यन्तरगल्यां चतुर्थभाग प्रमाणान्तर-वेदिका-संयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥1॥

पंचम भू के भाग चवालीस, वलय व्यास पहचानो।
कोट वेदिका पर सुन्दर से, बने चित्र यह जानो॥
समवसरण का चित्र कहीं पर, तीर्थंकर छवि प्यारी।
समवसरण के जिन बिम्बों को, नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं पंचमभूमौ-चतुर्थभागस्वर्णमय-महासुन्दर-तृतीयसालयुक्त-चतुःचत्वारिंशद् भागवलय-व्यास-वेदिकाचित्रसमूहसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥2॥

कहीं-कहीं पर जिन माता के, स्वप्न और फल देखो।
कहीं पंचकल्याणक वाले, चित्रों को सिर टेको॥

इन्द्र जन्म अभिषेक कहीं पर, करे नृत्य मनहारी।
समवसरण के जिन बिम्बों को, नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं पंचमभूमौ-शालवेदिकायां-जिनस्नपनचित्रसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥3॥

कहीं चित्र चक्री के झलकें, तो बलभद्र कहीं पर।
नारायण प्रतिनारायण के, वैभव दिखे कहीं पर॥
इन चित्रों में तुम क्यों उलझो, चेतन के अधिकारी।
समवसरण के जिन बिम्बों को, नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं पंचमभूमौ-शालवेदिकायां-चक्रवर्ती-नारायण-बलभद्रादि-विभवचित्रसंयुक्त समवसरण-स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥4॥

उत्तम मध्यम जघन्य तीनों, भोग भूमि की रचना।
बने आर्य आर्या युगलों के, चित्रों में न फँसना॥
यह चैतन्य चमत्कारी हैं, दिखे सम्पदा प्यारी।
समवसरण के जिन बिम्बों को, नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं पंचमभूमौ-शालवेदिकायां भोगभूमियुगलचित्रसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥5॥

कहीं आयतन कल्पवृक्ष तो, कहीं स्वर्ग की माया।
मंजूसा से बालक प्रभु की, सँभर रही है काया॥
इन्द्राणी ने देह सजाई, बालक प्रभु की प्यारी।
समवसरण के जिन बिम्बों को, नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं पंचमभूमौ-प्राक्चतुः स्वर्गमध्यमानस्तम्भे-सुन्दरवस्त्राभूषणयुक्त-मंजूषाद्वयसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥6॥

कहीं बने सागर पर्वत तो, है कुभोग भूमि कहीं।
नर मुख के घोड़ा बन्दर अज, गज मेंढ़ा बैल कहीं॥
बने कंगूरे वेदी कोट पर, गुरजें हैं सुखकारी।
समवसरण के जिन बिम्बों को, नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं पंचमभूमौ-वेदिकाशाल-कंगूरागुरजादियुक्त कोटशालवेदिकोपरि देवीदेवयुक्त-त्रितलविष्टरसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥7॥

ध्वजा भूमि में ध्वजा चिह्न दस, वृषभ मोर सिंह हाथी।
नभ माला है हंस चक्र है, कमल गरुड़ बहु भाँति॥
लहर-लहर हो ध्वजा मजा दे, होती अतिशयकारी।

समवसरण के जिन बिम्बों को, नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं पंचमभूमौ-सिंहादिदशभेद-चिन्हयुक्तध्वजासंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥8॥

एक चिह्न की ध्वजा एक सौ आठ मनोहर होतीं।
एक हजार अस्सी की संख्या, दस चिह्नों की होतीं॥
एक दिशा में ध्वजा उड़े ये, फर-फर होती प्यारी।
समवसरण के जिन बिम्बों को, नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं पंचमभूमौ-एकदिशासम्बन्ध्य-शीत्यधिकसहस्रध्वजासंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥9॥

एक दिशा की इतनी कितनी, चार दिशा की होतीं।
चार हजार तीन सौ चौबीस, महा ध्वजा कुल होतीं॥
पता पताका प्रभु का देकर, होतीं मंगलकारी।
समवसरण के जिन बिम्बों को, नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं पंचमभूमौ-चतुर्दिक्षु त्रिंशतविंशत्यधिक चतुसहस्रमहाध्वजासंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥10॥

महा ध्वजा के साथ एक सौ आठ ध्वजा हों छोटीं।
चार लाख छ्यासठ हजार अरु, पाँच सौ साठ होतीं॥
चार हजार तीन सौ बीसी, महा ध्वजा हों न्यारी।
समवसरण के जिन बिम्बों को, नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं पंचमभूमौ-चतुर्दिशासु 4320 महाध्वजाभिः सह 466560 लघुध्वजासंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥11॥

महा ध्वजा लघु ध्वजा सभी मिल, कितनी हो जिन ज्योति।
चार लाख सत्तर हजार अरु, आठ सौ अस्सी होती॥
झण्डे-झण्डी रत्नत्रय के, प्रतीक हों सुखकारी।
समवसरण के जिन बिम्बों को, नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं पंचूभूमौ-चतुर्दिशासु 470880 ध्वजासंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥12॥

ऋषभ नाथ के झण्डे वाले, सोने के हो खंभे।
है आधार अठासी अंगुल, पच्चीस धनु के झण्डे॥

इसके ऊपर उड़े पताका, देख नचे मन भारी।
समवसरण के जिन बिम्बों को, नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं पंचमभूमौ-वृषभजिनस्य अष्टाशीत्यंगुलप्रमाण-सुवर्णमय-ध्वजास्तम्भयुक्त-समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥13॥

पंचम भू में पर्वत सरवर, तरुवर चरण पखारी।
यही ध्यान कर संत महंता, पाएँ मुक्ती नारी॥
तीर्थंकर अरिहन्तों को भज, पाएँ मोक्ष सवारी।
समवसरण के जिन बिम्बों को, नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं पंचमभूमौ-विविधरचनासंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥14॥

षष्टम वृक्ष भूमि अर्घ्य

छठवीं भू के पार्श्व भीतरी, बने द्वार दुख भेदी।
भीतर बनी नाट्य शालाएँ, तीज कोट चउ वेदी॥
चवालीस भू भाग वलय अरु, व्यास बने मनहारी।
समवसरण के जिन बिम्बों को, नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं षष्ठभूमौ गल्यां वामदक्षिणभागे अन्तरगल्याः द्वारे नाट्यशालासंयुक्त समवसरण-स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥1॥

तीजा कोट बना सोने का, बैठक बने झरोखे।
वहीं ध्वजा के नीचे करते, सुरगण नाँच अनोखे॥
चौथी वेदी पीतवर्ण की, दिखती अतिशय धारी।
समवसरण के जिन बिम्बों को, नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं षष्ठभूमौ विविधरचनायुक्त-तृतीयसालयुक्त-चतुर्थवेदिकासंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥2॥

चारों विदिशाओं में वन हैं, कल्पवृक्ष के प्यारे।
ये देते मनवांछित वस्तु, दसों तरह के न्यारे ॥
तीर्थंकर के महा पुण्य से, मिले विभूति सारी।
समवसरण के जिन बिम्बों को, नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं षष्ठभूमौ मनोवाञ्छितवतुदायक-कल्पवृक्षसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥3॥

भाजन गृह आभूषण कपड़े, क्रमशः भोजन देते।
पेय वस्तु ज्योति माला दे, बाजे दीपक देते॥

कल्पवृक्ष मन में मंदिर हो, ताल वापिका प्यारी।
समवसरण के जिन बिम्बों को, नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं षष्ठभूमौ दशप्रकार कल्पवृक्षसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥4॥

वृक्ष तले हो चन्द्रकान्ति की, सुन लो दिव्य शिलाएँ।
जहाँ ध्यान कर संत महंता, अपने कर्म खिपाएँ॥
प्रभु के भक्त आत्म के रसिया, पाएँ पुण्य बहारी।
समवसरण के जिन बिम्बों को, नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं षष्ठभूमौ वापिकाद्रहमंदिरे-आत्मध्यानस्थमुनिगणयुक्त-चन्द्रकान्तशिलासंयुक्त समवसरण-स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥5॥

यहीं बैठकर सुर नर करते, प्रभु चरणों की सेवा।
धर्म देशना भव्य जीव सुन, पाते निज का मेवा॥
पर्वत शिला शिखर पर मुनिजन, ध्यान करें अविकारी।
समवसरण के जिन बिम्बों को, नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं षष्ठभूमौ धर्मोपदेशकयतियुक्त-पर्वतसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥6॥

यही देव क्रीड़ा कर पूजें, मुनियों के चरणों को।
आगे पीछे के भव पूछें, प्राणी सुख शरणों को॥
वन केन्द्रों में भूप वृक्ष हों, छाया हो सुखकारी।
समवसरण के जिन बिम्बों को, नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं षष्ठभूमौ स्वपरोपकारीदिगम्बरयतियुक्त-चतुर्दिशासु वनमध्ये चतुर्भूपवृक्षसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥7॥

एक दिशा में बारह द्वारी, बनी बीच जो वन में।
जहाँ सीढ़ियाँ आसन बैठक, बने झरोखे उनमें॥
रत्न जड़ित जो चमचम चमकें, सबने खूब निहारी।
समवसरण के जिन बिम्बों को, नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं षष्ठभूमौ एकदिशि वनमध्ये विविधरचनायुक्त-द्वादशद्वारीसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥8॥

उन पर शिखर कलश भी चमकें, रत्न ध्वजा लहराएँ।
यूँ लगती ज्यों भक्त जनों को, प्रभु के निकट बुलाएँ॥
जहाँ देव विद्याधर नाँचें, गाकर बने पुजारी।
समवसरण के जिन बिम्बों को, नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं षष्ठभूमौ जिनेन्द्रगुणगायक-देवयुक्त-द्वादशद्वारीसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥9॥

बारह द्वारी अन्दर सुन्दर, चौक बने त्रय कोटे।
बनीं बीच में तीन पीठ के, रत्न प्रकाशित होते॥
तीन पीठ पर मेरु नाम का, भूप वृक्ष सुखकारी।
समवसरण के जिन बिम्बों को, नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं षष्ठभूमौ द्वादशद्वार्याम् सालत्रयमध्ये सिंहासन त्रयपीठत्रययुक्त-भूपवृक्षसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥10॥

भूप वृक्ष की जड़ निर्मित हो, हीरे मोती द्वारा।
मणिमय शाखा और पत्र भी, निर्मित पन्ना द्वारा॥
लाल फूल फल मधुर मनोहर, हटे न नजर हमारी।
समवसरण के जिन बिम्बों को, नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं षष्ठभूमौ विविधवृक्षपुष्पयुक्त-भूपवृक्षसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥11॥

प्रभु से बारह गुने उच्च हों, भूप वृक्ष सब सुन्दर।
तथा वृक्ष की चार दिशा में, बने चार जिन मंदिर॥
मानस्तंभ देखकर भागें, मान कषाएँ सारी।
समवसरण के जिन बिम्बों को, नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं षष्ठभूमौ चतुर्दिशासु चतुः चतुः मन्दिरस्थित-भूपवृक्षसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥12॥

एक दिशा के तरु वर्णन ये, हो चारों के ऐसे।
थोड़े बहुत कहे पर पूरे, कौन कहेगा कैसे॥
पुण्य फलों को देख पुण्य की, समझो यह बलिहारी।
समवसरण के जिन बिम्बों को, नमोऽस्तु बारी-बारी॥

ॐ ह्रीं षष्ठभूमौ प्रथमभूपवृक्षसमान-शेषभूपवृक्षत्रयसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥13॥

(दोहा)

मेरुवृक्ष आग्नेय में, नैऋत में मंदार।
वायव में संतान हो, पारिजात प्रभु द्वार॥

ॐ ह्रीं षष्ठभूमौ चतुर्विदिशासु मेरुवृक्ष-द्विचतुर्भूपवृक्षसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥14॥

मेरु आदि चउ वृक्ष चैत्य पूजा

स्थापना

(दोहा)

जाकर षष्ठम भूमि को, इन्द्र भजे तरु चैत्य।
मेरु आदि चउ वृक्ष को, हम पूजे बन भृत्य॥

(सखी)

मन भज ले प्रभु का नाम, जिन समवसरण में आ के।
कर ले नमोऽस्तु गुणगान, खुश होकर शीश झुका के॥
ले द्रव्य पुकारे तुमको, प्रभु शीघ्र निहारो हमको।
सो हृदय विराजो स्वामी, हम हों निज के आसामी॥

ॐ ह्रीं मेरु आदि चतुर्वृक्ष चतुर्दिशिजिनमन्दिर-बिम्बसमूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो...। (पुष्पांजलिं...)

हम प्रासुक नीर चढ़ाएँ, मुनि सा निर्मल मन पाएँ।
सब मान कषाय नशाएँ, अर्हंत अवस्था पाएँ॥

ॐ ह्रीं मेरु आदि चतुर्वृक्ष चतुर्दिशिजिनमन्दिर-बिम्बेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

चंदन से वन्दन करके, प्रभु चरणों में सिर धर के।
संसार ताप हर पाएँ, घर समवसरण सा पाएँ॥

ॐ ह्रीं मेरु आदि चतुर्वृक्ष चतुर्दिशिजिनमन्दिर-बिम्बेभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

यह पुंज चढ़ा प्रभु चरणा, हम नाशें भव की भ्रमणा।
दो हमें सहारा स्वामी, हम हों निज के विश्रामी॥

ॐ ह्रीं मेरु आदि चतुर्वृक्ष चतुर्दिशिजिनमन्दिर-बिम्बेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

पुष्पों के गुच्छ चढ़ा के, चारित्र गन्ध महका के।
बन भक्त भ्रमर हम झूमें, चैतन्य बाग में घूमें॥

ॐ ह्रीं मेरु आदि चतुर्वृक्ष चतुर्दिशिजिनमन्दिर-बिम्बेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

नैवेद्य चढ़ाकर देवा, हम चखें स्वयं का मेवा।
दो ऐसा दाना-पानी, हम बनें भेद विज्ञानी॥

ॐ ह्रीं मेरु आदि चतुर्वृक्ष चतुर्दिशिजिनमन्दिर-बिम्बेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

ले दीप आरती गाएँ, हम आतम ज्योति जलाएँ।
सब अन्ध आवरण हर लो, अपने सम हमको कर लो॥

ॐ ह्रीं मेरु आदि चतुर्वृक्ष चतुर्दिशिजिनमन्दिर-बिम्बेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

हम धूप सुगन्धी खेकर, दौड़ें जिन गजरथ लेकर।
हो पार कर्म की आंधी, हो जाए सोना-चाँदी॥

ॐ ह्रीं मेरु आदि चतुर्वृक्ष चतुर्दिशिजिनमन्दिर-बिम्बेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

फल कर्मों के तज पाएँ, निज ज्ञान चेतना भाएँ।
सो करे फलों से अर्चा, निज पाए कर जिन चर्चा॥

ॐ ह्रीं मेरु आदि चतुर्वृक्ष चतुर्दिशिजिनमन्दिर-बिम्बेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

यह विश्व हमें तड़पाता, पर अर्घ्य अनर्घ बनाता।
सो प्रभु से प्रभु को पाने, हम आए अर्घ्य चढ़ाने॥

ॐ ह्रीं मेरु आदि चतुर्वृक्ष चतुर्दिशिजिनमन्दिर-बिम्बेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

सबकी इच्छा हो पूरी, हो अपनी कम प्रभु दूरी।
कुछ इंतजाम हो ऐसा, अब भक्त बने प्रभु जैसा॥

ॐ ह्रीं मेरु आदि चतुर्वृक्ष चतुर्दिशिजिनमन्दिर-बिम्बेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

मेरु आदि वृक्षस्थ जिनचैत्य अर्घ्य

(लय-माता तू दया करके...)

है समवसरण प्यारा, जिसके गुण कौन कहे।
हम चैत्य कल्पतरु के, कर नमोऽस्तु पूज रहे॥

मेरु-भूपकल्पवृक्षस्थित चैत्य अर्घ्य

आग्नेय दिशा में तो, मेरु सा उन्नत जो।
सो मेरु वृक्ष कहते, प्रभु चरणों में नत वो॥
जिन चैत्य बने इन पर, जिनको सब खोज रहे।
हम चैत्य कल्पतरु के, कर नमोऽस्तु पूज रहे॥

ॐ ह्रीं मेरुवृक्षस्थ आग्नेयदिशि जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥1॥

मन्दार-भूपकल्पवृक्षस्थित चैत्य अर्घ्य

नैऋत्य दिशा में तो, मंदार वृक्ष रहता।
मंदिर सम चमको रे, भक्तों से यह कहता॥
जिनके जिनबिम्बों का, जिन वैभव मौन रहे।

हम चैत्य कल्पतरु के, कर नमोऽस्तु पूज रहे॥

ॐ ह्रीं मन्दारवृक्षस्थ नैऋत्यदिशि जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥2॥

सन्तान-भूपकल्पवृक्षस्थित चैत्य अर्घ्य

वायव्य दिशा में तो, संतान कल्पतरु हैं।
संतान बनो प्रभु की, तब ही जीवन शुरू हैं॥
जिन पर जिन प्रतिमाएँ, जिन पर सब मोह रहे।
हम चैत्य कल्पतरु के, कर नमोऽस्तु पूज रहे॥

ॐ ह्रीं सन्तानवृक्षस्थ वायव्यदिशि जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥3॥

पारिजात-भूपकल्पवृक्षस्थित चैत्य अर्घ्य

ईशान दिशा में तो, तरु पारिजात होते।
ये शान हमारी है, अज्ञान ताप खोते॥
जिन की जिन मूरत भज, चिन्मूरत चाह रहे।
हम चैत्य कल्पतरु के, कर नमोऽस्तु पूज रहे॥

ॐ ह्रीं पारिजातवृक्षस्थ ईशानदिशि जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं... ॥4॥

जयमाला

(दोहा)

छठी भूमि सबसे छटी, छटा बिखेरे रोज।
अतः चैत्य जयमाल कह, चाहें आतम खोज॥

(विद्योदय छन्द-16,11)

जय-जयवन्त रहे चैत्यालय, समवसरण की शान।
जहाँ छठीं भू में शोभित हों, कल्पवृक्ष भगवान॥
भूप वृक्ष के प्रभु दर्शन कर, टूटे मन का मौन।
कह न सके जिसका यश सुर भी, अतः कहेगा कौन॥1॥
फिर भी जैसे आम्र मौर लख, कोयल भरती कूक।
तो रख सकते क्या हम संयम, अतः उठी है हूक॥
दिखे छठी की छटा-छटी ज्यों, पूर्व कहीं चित चोर।
ऐसे वृक्षों की शाखाएँ, फैल रहीं हर ओर॥2॥
जिन पर मंदिर गन्धकुटी में, सिंहासन लवलीन।
जिन पर कमलासन पर होते, सिद्ध बिम्ब आसीन॥

जिन पर तीन छत्र शोभित हों, ढुरते चमर सफेद।
भक्त यहीं पर पूजा करके, दूर करें दुख खेद॥3॥
इन्द्र पूज कर नाँच रहा है, ताण्डव करे विशाल
सा रे गा मा पा धा नि सा, देकर सुर में ताल॥
लगा रहा त्रय परिक्रमा फिर, कर-कर के त्यौहार।
देव बहाते गन्धोदक की, धीमी मंद वयार॥4॥
आगे मानस्तंभ पूज कर, होता मालामाल।
चार दिशा के सोलह मंदिर, पूजे भक्त त्रिकाल॥
पता नहीं कितने जन्मों के, पुण्य उदय जब आए।
तब जैनों में जन्म प्राप्त कर, जिन मंदिर ये पाए॥5॥
जिनके वैभव में निज वैभव, खोज रहे मुनि लोग।
यहीं विराजित होकर करके, शुद्ध आत्म का भोग॥
यहीं करें उपदेश तत्त्व का, जिनशासन चमकाएँ।
'सुव्रत' जिनकी महिमा कैसे, अल्पबुद्धि कह पाएँ॥6॥
फिर भी अपना फर्ज निभाकर, बढ़ा रहे जिनशान।
भाव यही है समवसरण से, हो सबका कल्याण॥
आगामी अरिहन्त सिद्ध हों, किन्तु आज निर्ग्रन्थ।
भव दुख के सब पंथ त्याग कर, पाएँ सौख्य अनन्त॥7॥

(सोरठा)

जयमाला गुणगान, छठवीं भू की कह चुके।
समवसरण में धाम, मिले अतः हम हैं झुके॥

ॐ ह्रीं मेरु आदि चतुर्वृक्षस्थ चतुर्दिशिजिनमन्दिर-बिम्बेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(हरिगितिका)

जो मेरु आदिक चैत्य पूजा कर खुशी से नाँचते।
वे रोग भय दुख शोक आदिक, शीघ्र अपने नाशते॥
अब और क्या ज्यादा कहे वे, कर्म हर कर सिद्ध हो।
सो भावना 'सुव्रत' करे ये, नित्य प्रभु सान्निध्य हो॥

(पुष्पांजलिं...)

सप्तम स्तूप भूमि अर्घ्य

(विष्णु)

सप्तम भू स्तूप भूमि के, उभय पार्श्व प्यारे।
अंतर गली के द्वार भीतरी, चतुर वेदिका रे॥
बुरज कंगूरे छाजे शोभे, चैत्य चरण आ के।
नमोऽस्तु कर हम अर्घ्य चढ़ाएँ, समवसरण पा के॥

ॐ ह्रीं सप्तभूमिगल्याः स्तूपवामदक्षिणभागे अन्तरगल्याः द्वारे आभ्यन्तरे चतुर्थवेदिका-संयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥1॥

चौथी वेदी सुन्दर-सुन्दर, हृदय चुराती है।
वहीं विराजे मुनियों की छवि, हमें लुभाती है॥
हम भी मुनि बन आतम शोधें, चैत्य चरण पा के।
नमोऽस्तु कर हम अर्घ्य चढ़ाएँ, समवसरण पा के॥

ॐ ह्रीं सप्तभूमौ विविधचित्रयुक्त-चतुर्थवेदिकासंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥2॥

इसी धाम में कुछ-कुछ मुनिजन, निज आतम ध्याते।
कुछ उपदेश ज्ञान का देकर, शिव-पथ बतलाते॥
बने तपस्वी करें तपस्या, गिरि वन तट जा के।
नमोऽस्तु कर हम अर्घ्य चढ़ाएँ, समवसरण पा के॥

ॐ ह्रीं सप्तभूमौ चतुर्थवेदिका-चतुर्थशालमध्ये धर्मोपदेशक-यतिचित्रसंयुक्त समवसरण-स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥3॥

निरख-निरख कर ईर्यापथ से, मुनिजन चलते हैं।
श्रावक अक्षय दान करें सो, रत्न बरसते हैं॥
इस स्तूप भूमि में मुनिजन, निज आतम ध्याते।
नमोऽस्तु कर हम अर्घ्य चढ़ाएँ, समवसरण पा के॥

ॐ ह्रीं सप्तभूमौ चतुर्थवेदिका-चतुशालमध्ये आत्मलीनदिगम्बरयतिसंयुक्त समवसरण-स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥4॥

कहीं चमकते लौकान्तिक सुर, कहीं मेघ उमड़े।
लुका-छिपी रवि करें उन्हीं में, बिजली भी तड़के॥
कहीं बोलती कोयल कुहु-कुहु, मयूर भी नाँचे।
नमोऽस्तु कर हम अर्घ्य चढ़ाएँ, समवसरण पा के॥

ॐ ह्रीं सप्तभूमौ नानाविधचित्रचित्रित-चतुर्थवेदिकासंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥5॥

चौथी वेदी चार भाग की, चौथा कोट पुनः।
स्वच्छ साफ हीरों के द्वारा, चौथा भाग बना॥
कुबेर फूला नहीं समाये, प्रभु सेवा पा के।
नमोऽस्तु कर हम अर्घ्य चढ़ाएँ, समवसरण पा के॥

ॐ ह्रीं सप्तभूमौ चतुर्थशाल-चतुर्थभागस्वेतवर्णचतुर्थवदिकासंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥6॥

वलय व्यास बाईस भाग मय, मंदिर पंक्ति रही।
नीव वज्र की खंभ स्वर्ण के, सुन्दर कृति रही॥
सातों विध संसार नशाएँ, सप्तम भू पा के।
नमोऽस्तु कर हम अर्घ्य चढ़ाएँ, समवसरण पा के॥

ॐ ह्रीं सप्तभूमौ द्वाविंशतिभाग-वलयव्यासयुक्त-मन्दिरपक्तिसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥7॥

बनी बैठकें द्वय-त्रय मंजिल, चउ मंजिल वाली।
परदे मय खिड़की भी चमकें, मणि झालर वाली॥
देव देवियाँ विद्याधर भी, नाँचें सुख पा के।
नमोऽस्तु कर हम अर्घ्य चढ़ाएँ, समवसरण पा के॥

ॐ ह्रीं सप्तभूमौ विविधरचनायुक्त-जिनमन्दिरसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥8॥

जिन मंदिर पर शिखर कलश-ध्वज, हमें बुलाते हैं।
नीचे भक्त मनाके उत्सव, पुण्य कमाते हैं॥
बनीं नृत्य शालायें जिनमें, सुर-नटियाँ नाँचें।
नमोऽस्तु कर हम अर्घ्य चढ़ाएँ, समवसरण पा के॥

ॐ ह्रीं सप्तभूमौ येवम्विधानेकरचनासंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥9॥

मंदिर मध्य चौक निर्मित तो, कुर्सीदार रहें।
जिनमें रत्न सीढ़ियाँ होतीं, जिन पर भक्त चढ़ें॥
दिखे मुक्ति का आतम मंदिर, जिन मंदिर पा के।
नमोऽस्तु कर हम अर्घ्य चढ़ाएँ, समवसरण पा के॥

ॐ ह्रीं सप्तभूमौ मन्दिरमध्यचतुष्कोपरि मण्डपसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥10॥

बने चौक के ऊपर खंभे, सुनलो एक हजार।
ध्वजा कलश मय शोभ रहा है, श्री मण्डप सुखकार॥

धोखा त्याग मिले निज मौका, जिन चौका पा के।
नमोऽस्तु कर हम अर्घ्य चढ़ाएँ, समवसरण पा के॥

ॐ ह्रीं सप्तभूमौ मध्यचतुष्कोपरि मण्डपसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥11॥

मण्डप के तोरण द्वारों पर, माला लटक रहीं।
प्रभु के पुण्य प्रताप रूप से, झिलमिल चमक रहीं॥
मुक्ति महल में हो वरमाला, पुण्यफला पा के।
नमोऽस्तु कर हम अर्घ्य चढ़ाएँ, समवसरण पा के॥

ॐ ह्रीं सप्तभूमौ श्रीमण्डपसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥12॥

बनीं वहीं पर गन्धकुटी में, त्रय सिंहासन हों।
फिर कमलासन पर भगवन पर, तीन छत्र सिर हों॥
चार-चार लघु मण्डप होते, चउ कोने पा के।
नमोऽस्तु कर हम अर्घ्य चढ़ाएँ, समवसरण पा के॥

ॐ ह्रीं सप्तभूमौ श्रीमण्डपकेवलजिनसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥13॥

वहीं धर्म दे श्रुतकेवलि गुरु, सुन्दर कृतियों में।
दिव्य देशना भव्य जीव सुन, फँसे न गतियों में॥
प्रभु वैभव को कौन कहेगा, अल्प बुद्धि पा के।
नमोऽस्तु कर हम अर्घ्य चढ़ाएँ, समवसरण पा के॥

ॐ ह्रीं सप्तभूमौ श्रीमण्डपे-श्रुतकेवलिसंयुक्त-विविधरचनायुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥14॥

चउ दिशा नवस्तूप पूजा

(दोहा)

आत्म ज्योतिमय चैत्य हैं, जिनके धाम स्तूप।
नमोऽस्तु कर पूजा करें, पाने आत्म स्वरूप॥

(लय-भक्ति बेकरार है)

तीर्थंकर दरवार है, समवसरण सुखकार है।
चार दिशा के स्तूपों को, नमोऽस्तु बारम्बार है॥
पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण, चउ दिशि के नौ-नौ स्तूप।
चमक रहे हैं लगे सुहाने, झलकाते आतम का रूप ॥
भक्तों के आधार हैं, पूजा के शृंगार हैं।
चार दिशा के स्तूपों को, नमोऽस्तु बारम्बार है॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिशि नवस्तूप-जिनबिम्बसमूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः..। अत्र मम सन्निहितो...। (पुष्पांजलिं...)

कहीं जन्म की पीड़ा दिखती, कहीं मृत्यु का भय मारे।
ऐसे में अब समवसरण बिन, अपना कौन सहारा रे॥
जाने को भव पार हैं, देते जल की धार हैं।
चार दिशा के स्तूपों को, नमोऽस्तु बारम्बार है॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिशि नवस्तूप-जिनबिम्बेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

ज्यों-ज्यों भव की आग बुझाते, त्यों-त्यों ज्वाला सी भड़के।
हिम चंदन में शान्ति नहीं सो, समवसरण में आ धमके॥
हरने को संसार है, देते चंदन धार हैं।
चार दिशा के स्तूपों को, नमोऽस्तु बारम्बार है॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिशि नवस्तूप-जिनबिम्बेभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

पुंज चढ़ाकर समवसरण में, अपनी याद हमें आती।
शीघ्र स्वरूपाचरण प्राप्त हो, यही भावना मन भाती॥
अपने घर से प्यार है, अक्षत के उपहार हैं।
चार दिशा के स्तूपों को, नमोऽस्तु बारम्बार है॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिशि नवस्तूप-जिनबिम्बेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

भ्रमर फूल पर ज्यों मँडराते, सौरभ पराग पाने को।
समवसरण में भक्त मचलते, निज आतम महकाने को॥
पापों का परिहार है, पुष्पांजलि बहार है।
चार दिशा के स्तूपों को, नमोऽस्तु बारम्बार है॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिशि नवस्तूप-जिनबिम्बेभ्यः कामबाण विध्वंसानय पुष्पाणि...।

शुद्ध ज्ञान दर्शन ना समझे, भोजन को जीवन माना।
सो अपराध करें हम सारे, आतम रस ना पहचाना॥
निज का निज आहार है, नैवेद्यक रसदार है।
चार दिशा के स्तूपों को, नमोऽस्तु बारम्बार है॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिशि नवस्तूप-जिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

भौतिकता के उजियाले में, भक्त गुमे जग चमक रहा।
भक्त इसी की चकाचौंध से, बचकर प्रभु को निरख रहा॥
हरने को अँधियार है, दीपों का त्यौहार है।

चार दिशा के स्तूपों को, नमोऽस्तु बारम्बार है॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिशि नवस्तूप-जिनबिम्बेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

अष्ट कर्म के रिश्ते नाते, आतम वैभव धुआँ करें।
बस विच्छेद कर्म का करने, भक्त धूप का धुआँ करें॥
कर्मों का परिहार है, धूप घटों का द्वार है।
चार दिशा के स्तूपों को, नमोऽस्तु बारम्बार है॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिशि नवस्तूप-जिनबिम्बेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

सांसारिक सारे फल प्यारे, धर्म पुण्य से ही खिलते।
यही तथ्य निज तत्त्व बने तो, समवसरण के प्रभु मिलते॥
पाना निज त्यौहार है, फल लेकर सत्कार है।
चार दिशा के स्तूपों को, नमोऽस्तु बारम्बार है॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिशि नवस्तूप-जिनबिम्बेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

करण चरण भव शरण वरण पर, समवसरण ही भारी है।
जिसे मिले प्रभु समवसरण वह, भव-भव तक आभारी है॥
आतम का शृंगार है, मिले अर्घ्य सा हार है।
चार दिशा के स्तूपों को, नमोऽस्तु बारम्बार है॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिशि नवस्तूप-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

चतुर्दिशि नवस्तूप अर्घ्य

(दोहा)

समवसरण में पूर्व में, शोभें जो स्तूप।
उन्हें नमोऽस्तु कर भजें, हर लें भव का कूप॥

ॐ ह्रीं पूर्वदिशि नवस्तूप-जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं...।

समवसरण में दक्षिणी, शोभें जो स्तूप।
उन्हें नमोऽस्तु कर भजें, हर लें भव का कूप॥

ॐ ह्रीं दक्षिणदिशि नवस्तूप-जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं...।

समवसरण में पश्चिमी, शोभें जो स्तूप।
उन्हें नमोऽस्तु कर भजें, हर लें भव का कूप॥

ॐ ह्रीं पश्चिमदिशि नवस्तूप-जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं...।

समवसरण में उत्तरी, शोभें जो स्तूप।
उन्हें नमोऽस्तु कर भजें, हर लें भव का कूप॥

ॐ ह्रीं उत्तरदिशि नवस्तूप-जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं...।

(पूर्णार्घ्य)

हमने अपना फर्ज निभाया, समवसरण में आने का।
तुम भी अपना फर्ज निभाओ, समवसरण लगवाने का॥
अर्जी बारम्बार है, जिनका निज भंडार है।
चार दिशा के स्तूपों को, नमोऽस्तु बारम्बार है॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिशि नवस्तूप-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

भूमि सातवीं में बने, पूज्य स्तूप छत्तीस।
जयमाला गुणमाल अब, कहे झुकाकर शीश॥

(ज्ञानोदय)

समवसरण की सप्तम भू में, चार दिशा में चउ गलियाँ।
स्तूप बने नव एक दिशा में, कुल छत्तीस पूज्य बढ़ियाँ॥
जिनको करके नमोऽस्तु सादर, उनकी रचनायें समझे।
परमातम सम आतम पाए, जड़ वैभव में न उलझे॥1॥
पूर्व दिशा के नव स्तूपों, दरवाजे अनुपम सुन्दर।
सुनो! एक की कथा सुनाते, जो देता मुक्ति मंदिर॥
जहाँ रत्नमय तीन पीठ हैं, अतः मनोहर स्तूप लगे।
मणि मोती की मालाओं से, सचमुच अद्‌भुत रूप लगे॥2॥
प्रभु की ऊँचाई से ऊँचे, बारह गुने स्तूप होते।
रहे शिखर पर कलश ध्वजा भी, अंतर का कल्मश धोते॥
तीन-तीन तोरण द्वारों के, अन्दर सिंहासन चमकें।
सुनो! इसी पर कमलासन पर, अर्हंत जिनवर जी दमकें॥3॥
जय जय श्री अरिहन्त सिद्ध की, प्रतिमायें आनन्द भरें।
प्रातिहार्य के वैभव मय हों, भक्तों के हर द्वंद्व हरें।
मंगल-मंगल अष्ट द्रव्य ले, देव देवियाँ नाच रहे।

भव्य भक्त भी रोमांचित हो, तीर्थंकर यश वाँच रहे॥4॥
जिनदर्शन कर पुण्य कमाकर, जीवन धन्य करें अपना।
अभव्य जीवों को यह दर्शन, हो न सके लगता सपना॥
एक स्तूप का यह वर्णन तो, थोड़ा कहा नहीं पूरा।
कुल छत्तीस स्तूप का वर्णन, कह न सके कोई शूरा॥5॥
फिर भी श्रद्धा और समर्पण, पूजा को मजबूर करे।
पुण्य फलों को हमें खिलाकर, कर्म-भर्म दुख दूर करे॥
जिन स्तूप पूजकर हमको, लगे रूप परमातम के।
'सुव्रत' जिन स्वरूप पाएँ सो, समवसरण में आ चमके॥6॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिशि नवस्तूप-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(हरिगीतिका)

संसार में सर्वोच्च चेतन, हैं प्रभु तीर्थेश जी।
सुर इन्द्र पूजें पर्व कर, हम भी भजें सर्वेश जी॥
स्वीकार कर लो अब निमंत्रण, हे! प्रभु हम पूजते।
परमातमा को कर नमोऽस्तु, आतमा निज खोजते॥
वे रोग भय दुख शोक आदिक, शीघ्र अपने नाशते॥
अब और क्या ज्यादा कहें वे, कर्म हर कर सिद्ध हो।
सो भावना 'सुव्रत' करे ये, नित्य प्रभु सान्निध्य हो॥

अष्टम श्री मण्डप भूमि पूजा प्रारंभ

(दोहा)

समवसरण के केंद्र में, मण्डप में जिनराज।
उनकी पूजा हम करें, करके नमोऽस्तु आज॥

(सोरठा)

करके कुछ गुणगान, जिनवर की स्तुति करें।
बनने को भगवान, नमोऽस्तु कर मुक्ति वरें॥

(हरिगीतिका)

जो वाँचकर स्तूप पूजा, कर खुशी से नाचते।

(सोरठा)

तीर्थंकर भगवान, भव्य हृदय के मध्य हो।
अतः करें आह्वान, समवसरण सम भक्त हों॥

ॐ ह्रीं श्रीमण्डपभूमौ समवसरणस्थित जिनेन्द्र अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो...।

(पुष्पांजलिं...)

(तर्ज माता तू दया करके ...)

जग का इच्छा जल तो, बस जन्म-मरण जल दे।
हम भव जल में डूबे, जो पीड़ा पल-पल दे॥
जल समवसरण में ला, इच्छा दीक्षा की है।
सो तीर्थंकर स्वामी, अब तुम्हें नमोऽस्तु है॥

ॐ ह्रीं श्रीमण्डपभूमौ समवसरणस्थित जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

निज के रिश्तों में हम, तन मन के ताप सहें।
पर इन्हें न त्याग सकें, सो प्रभु से दूर रहें॥
अब प्रभु चंदन पाने, इच्छा दीक्षा की है।
सो तीर्थंकर स्वामी, अब तुम्हें नमोऽस्तु है॥

ॐ ह्रीं श्रीमण्डपभूमौ समवसरणस्थित जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

तुम बिन हमको स्वामी, अब कौन सहारा है।
सो निज स्वरूप पाने, प्रभु तुम्हें पुकारा है॥
घर समवसरण सा हो, इच्छा दीक्षा की है।
सो तीर्थंकर स्वामी, अब तुम्हें नमोऽस्तु है॥

ॐ ह्रीं श्रीमण्डपभूमौ समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

हर पुष्प खिले जब तक, धरती से जुड़ा रहे।
हर भक्त खिले जब तक, जिनवर से जुड़ा रहे॥
अब कामशूल हरने, इच्छा दीक्षा की है।
सो तीर्थंकर स्वामी, अब तुम्हें नमोऽस्तु है॥

ॐ ह्रीं श्रीमण्डपभूमौ समवसरणस्थित जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

रिश्तों की भूख मिटे, बस प्रेम लुटाओ तो।
आतम रस झलकेगा, परमातम ध्यायो तो॥
दर्शन के भूखे हम, इच्छा दीक्षा की है।
सो तीर्थंकर स्वामी, अब तुम्हें नमोऽस्तु है॥

ॐ ह्रीं श्रीमण्डपभूमौ समवसरणस्थित जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

दुनियाँ की जगमग में, घनघोर अँधेरा है।
हम भक्त न खो जाएँ, सो तुमको टेरा है॥
अब आतमदीप जले, इच्छा दीक्षा की है।
सो तीर्थंकर स्वामी, अब तुम्हें नमोऽस्तु है॥

ॐ ह्रीं श्रीमण्डपभूमौ समवसरणस्थित जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

कर्मों के जाल बढ़े, हर जीव यहाँ उलझें।
जो समवसरण आते, वे भव्य जीव सुलझें॥
भव कर्मों से बचने, इच्छा दीक्षा की है।
सो तीर्थंकर स्वामी, अब तुम्हें नमोऽस्तु है॥

ॐ ह्रीं श्रीमण्डपभूमौ समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

ज्यों फल खुद अर्पित हो, पर का उपकार करें।
पर फल अर्पण का फल, पर से भव पार करें॥
अब श्रीफल अर्पण कर, इच्छा दीक्षा की है।
सो तीर्थंकर स्वामी, अब तुम्हें नमोऽस्तु है॥

ॐ ह्रीं श्रीमण्डपभूमौ समवसरणस्थित जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हैं कहाँ भाव ऐसे, जो एक अकेले हों।
पर शुद्ध वही हो जो, जिनगुरु के चेले हों॥
ले अर्घ्य बनें चेले, इच्छा दीक्षा की है।
सो तीर्थंकर स्वामी, अब तुम्हें नमोऽस्तु है॥

ॐ ह्रीं श्रीमण्डपभूमौ समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

(पूर्णार्घ्य)

जड़ के हम अर्घ्य बना, कई बार किए पूजा।
अब अर्घ्य बने ऐसा, भव मिले नहीं दूजा॥
निज अर्घ्य बनाने को, इच्छा दीक्षा की है।
सो तीर्थंकर स्वामी, अब तुम्हें नमोऽस्तु है॥
ये अर्घ्य अर्चनाएँ, क्या कहती हैं हमसे।
कुछ सार नहीं जग में, हम शीघ्र मिलें तुमसे॥
खुद प्रभु बन जाने को, इच्छा दीक्षा की है।
सो तीर्थंकर स्वामी, अब तुम्हें नमोऽस्तु है॥

ॐ ह्रीं श्रीमण्डपभूमौ समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

समवसरण के बीच में, मण्डप में तीर्थेश।
जिनकी जयमाला कहें, पाने आतम देश॥

(त्रिभंगी)

जय जय तीर्थंकर, पूर्ण दिगम्बर, आत्म हितंकर, जिन देवा।
हे केवलज्ञानी, प्रभु विज्ञानी, तुम्हें नमामि, कर सेवा॥
तुम कर्म विनाशी, आत्म निवासी, हम संन्यासी, पद पाएँ।
जयमाला गाएँ, शीश झुकाएँ, पुण्य कमाएँ, गुण गाएँ॥

(चौपाई)

जय-जय श्री तीर्थंकर स्वामी, जय अर्हंत जिनेश्वर नामी।
चार घातिया कर्म निवारी, अतः अनन्त चतुष्टय धारी॥1॥
दोष नशाए गुण प्रकटाए, परमौदारिक तन को पाए।
मोह मिटाए तत्त्व बताए, मोक्ष मार्ग जग को बतलाए॥2॥
कर्म कीच में कमल खिलाए, ज्ञान सुधा का रस बरसाये।

सत्य अहिंसा धर्म सिखाए, चिदानन्द चैतन्य सजाए॥3॥
दे वैराग्य समाधि वस्तु, अतः इन्द्रगण करें जयोऽस्तु।
हम भी चाहें शान्तिरस्तु, सो चरणों में करें नमोऽस्तु॥4॥
करुणादाता तुम्हें नमोऽस्तु, हरे असाता तुम्हें नमोऽस्तु।
भाग्यविधाता तुम्हें नमोऽस्तु, मोक्ष प्रदाता तुम्हें नमोऽस्तु॥5॥
अतिशय मंडित तुम्हें नमोऽस्तु, ज्ञान अखंडित तुम्हें नमोऽस्तु।
तीर्थंकर के रूप नमोऽस्तु, समवसरण के भूप नमोऽस्तु॥6॥
संकटमोचक तुम्हें नमोऽस्तु, भव-दुख शोषक तुम्हें नमोऽस्तु।
सुख-गुण पोषक तुम्हें नमोऽस्तु, आतम शोधक तुम्हें नमोऽस्तु॥7॥
भक्त पुकारें तुम्हें नमोऽस्तु, हमें निहारो कहें नमोऽस्तु।
कर दो अब उद्धार नमोऽस्तु, खुले मुक्ति का द्वार नमोऽस्तु॥8॥
दे दो थोड़ा साथ नमोऽस्तु, थाम लीजिये हाथ नमोऽस्तु।
करें झुका के माथ नमोऽस्तु, याद करें दिन रात नमोऽस्तु॥9॥

(सोरठा)

नमो नमो अरहंत, जयमाला में गूँजते।
हम भी हों भगवंत, अतः भक्ति से पूजते॥

ॐ ह्रीं श्रीमण्डपभूमौ समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(हरिगीतिका)

मण्डल रचा मण्डप रचा हमशेष पूजा रचाते॥
वे रोग भय दुख शोक आदिक, शीघ्र अपने नाशते॥
अब और क्या ज्यादा कहे वे, कर्म हर कर सिद्ध हो।
सो भावना 'सुव्रत' करे ये, नित्य प्रभु सान्निध्य हो॥

(पुष्पांजलिं...)

श्रीमण्डप भूमि अर्घ्य

(लय-पिछी रे पिछी...)

भूमि रे भूमि ये तो बता तूने, कौन सा काम किया है।
खुश होकर जिनवर ने तुझ पर, आसन थाम लिया है॥
भूमि बोलो ना, कुछ तो बोलो ना...॥
चौथा कोट वज्र का प्रभु से, चार गुना ऊँचा है।
पचरंगा रत्नों का उज्ज्वल, एक भाग मोटा है॥

रात दिवस का भेद मिटाता, जगमग ज्ञान दिया है।
खुश होकर जिनवर ने तुझ पर, आसन थाम लिया है॥
भूमि बोलो ना, कुछ तो बोलो ना...॥

ॐ ह्रीं अष्टमभूमौ जिनतनुतः चतुर्गुणोतुभागायत-वज्रमय-श्वेतवर्ण-चतुर्थप्राकार-प्रबुद्ध कान्तिसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥1॥

बुरज कँगूरे ध्वजा कुर्सियाँ,मणि सोपान सहारे।
जिन पर चढ़कर चौक बने फिर, वज्र कोट चढ़ द्वारे॥
अष्टम भू पर जमकर प्रभु ने, आतम ज्ञान दिया है।
खुश होकर जिनवर ने तुझ पर, आसन थाम लिया है॥
भूमि बोलो ना, कुछ तो बोलो ना...॥

ॐ ह्रीं अष्टमभूमौ द्वारयुक्त-चतुर्थप्राकार-वुरजकंगूराध्वजासुशोभित-विष्ठर विशिष्ट सप्तप-सोपानसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥2॥

तोरण द्वार रत्न के चौखट, किबाड़ हों पन्ना के।
जिनमें सुन्दर जाल बने हैं, द्वारपाल पहरा दे॥
गदा कल्पवासी देवों ने, कर में थाम लिया है।
खुश होकर जिनवर ने तुझ पर, आसन थाम लिया है॥
भूमि बोलो ना, कुछ तो बोलो ना...॥

ॐ ह्रीं अष्टमभूमौ अनेकरचनायुक्त-द्वारपालसहितद्वारयुक्त-चतुर्थप्राकारसंयुक्त समवसरण-स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥3॥

रत्नमुकुट मय द्वारपाल हों, कानों में कुंडल हों।
हाथों में हों कड़े अँगूठीं, नये वस्त्र सुन्दर हों॥
अन्दर पंचम वेदी ने तो, मन को मोह लिया है।
खुश होकर जिनवर ने तुझ पर, आसन थाम लिया है॥
भूमि बोलो ना, कुछ तो बोलो ना...॥

ॐ ह्रीं अष्टमभूमौ द्वारपालयुक्त-द्वारसहितपंचमवेदिकायुक्त-चतुर्थप्राकारसंयुक्त समवसरण-स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥4॥

कोट वज्र का बना हुआ फिर, पंचम वेदी प्यारी।
अष्टम भूमि की गलियों के, अगलें बगलें न्यारी॥
चार-चार अंतर ने इसका, अंतर भेद किया है।

खुश होकर जिनवर ने तुझ पर, आसन थाम लिया है॥
भूमि बोलो ना, कुछ तो बोलो ना...॥

ॐ ह्रीं अष्टमभूमौ वज्रप्राकार-पंचमवेदिकाया अष्टमगल्या भूमौउभयपार्श्वभूमैः चतुरन्तराल-संयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥5॥

दो-दो गलियों में वेदी की, फटिकमयी दीवारें।
एक दिशा में चार भीतियाँ, त्रय कोठे हों न्यारे॥
बारह कोठे सोलह भीति, यों शृंगार दिया है।
खुश होकर जिनवर ने तुझ पर, आसन थाम लिया है॥
भूमि बोलो ना, कुछ तो बोलो ना...॥
कोठों पर हो शिखर मनोहर, गुमठी कलशा झंडे।
द्वारों पर सुर देव नाँचते, बन्धन वारे बँधे॥
दरवाजे पर घंटे बजते, तन झंकार दिया है।
खुश होकर जिनवर ने तुझ पर, आसन थाम लिया है॥
भूमि बोलो ना, कुछ तो बोलो ना...॥

ॐ ह्रीं अष्टमभूमौ विविधरचनायुक्तद्वादशशाल-प्रकौष्ठसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥6॥

त्रय कोठे आग्नेय दिशा में, पहला मुनि श्रमणों का।
कल्पवासिनी सुरियों का फिर, आर्या महिलाओं का॥
यहाँ बैठकर भव्यजनों ने, प्रभु को पूज लिया है।
खुश होकर जिनवर ने तुझ पर, आसन थाम लिया है॥
भूमि बोलो ना, कुछ तो बोलो ना...॥

ॐ ह्रीं अष्टमभूमौ आग्नेयदिशिकोष्ठत्रये दिगम्बरमुनि-कल्पवासिनीमनुष्यनीसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥7॥

त्रय कोठे नैऋत्य दिशा में, ज्योतिषिनी का पहला।
फिर व्यंतर फिर भवनवासिनी, कोट देवियों वाला॥
यहाँ पधारे भव्यजनों को, सम्यग्ज्ञान दिया है।
खुश होकर जिनवर ने तुझ पर, आसन थाम लिया है॥
भूमि बोलो ना, कुछ तो बोलो ना...॥

ॐ ह्रीं अष्टमभूमौ नैऋत्यदिशि-कोष्ठत्रये-ज्योतिष्कव्यन्तरणी-भवनवासिनीसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥8॥

त्रय कोठे वायव्य दिशा में, प्रथम भवनवासी का।
फिर व्यंतर फिर ज्योतिष सुर का, कोठा विश्वासी का॥
दिव्य देशना की आशा से, दिल को थाम लिया है।
खुश होकर जिनवर ने तुझ पर, आसन थाम लिया है॥
भूमि बोलो ना, कुछ तो बोलो ना...॥

ॐ ह्रीं अष्टमभूमौ वायव्यदिशि-कोष्ठत्रये ज्योतिष्कभवनवासी-व्यन्तरसुरवाससंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥9॥

त्रय कोठे ईशान दिशा में, प्रथम कल्पवासी का।
फिर मानव तिर्यंच बाद में, कोठा संन्यासी सा॥
आत्म हितैषी भक्त जनों ने, प्रभु का ध्यान किया है।
खुश होकर जिनवर ने तुझ पर, आसन थाम लिया है॥
भूमि बोलो ना, कुछ तो बोलो ना...॥

ॐ ह्रीं अष्टमभूमौ ईशानदिशि-कोष्ठत्रये कल्पोपपन्न-देवनरतिर्यंचसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥10॥

वज्रकोट सूची अड़तालीस, वेदी चौबीस भागी।
अष्टम भू पर सभा लगी यों, शामिल हों बड़भागी॥
एसी शोभा मय स्वामी ने, जिन उपदेश दिया है।
खुश होकर जिनवर ने तुझ पर, आसन थाम लिया है॥
भूमि बोलो ना, कुछ तो बोलो ना...॥

ॐ ह्रीं अष्टमभूमौ वज्रशालाष्टचत्वारिंशद्भागे वज्रमयचतुर्थसालतः चतुर्विंशतिभाग वेदिकासंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥11॥

चौबीस भागों के होते हैं, चार हजार धनुष तो।
सूची आठ धनुष ऊँची हो, सोलह सीढ़ी फिर हो॥
प्रथम पीठ वैडूर्य धूल की, जिसने बुला लिया है।
खुश होकर जिनवर ने तुझ पर, आसन थाम लिया है॥
भूमि बोलो ना, कुछ तो बोलो ना...॥

ॐ ह्रीं अष्टमभूमौ अष्टचापोच्च सूचीयुक्त चतुःसहस्रचाप प्रथमपीठसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥12॥

प्रथम पीठ पर यक्ष देव तो, चार दिशाओं वाले।
धर्म चक्र मस्तक पर धारें, हजार आरे वाले॥

पहिये जैसे चमक-चमक कर, सबको मार्ग दिया है।
खुश होकर जिनवर ने तुझ पर, आसन थाम लिया है॥
भूमि बोलो ना, कुछ तो बोलो ना...॥

ॐ ह्रीं अष्टमभूमौ बद्धकरमस्तकस्थधर्मचक्र-यक्षयुक्तप्रथमपीठयुक्त-चतुर्दिश-वसुमङ्गलद्रव्य-धर्मचक्रसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥13॥

इन्द्र पीठ दूजी पर चढ़कर, सुनता है जिनवाणी।
श्री जिनवर की पूजा करके, भाव करे कल्याणी॥
निज कोठे में बैठ इन्द्र ने, प्रभु से ज्ञान लिया है।
खुश होकर जिनवर ने तुझ पर, आसन थाम लिया है॥
भूमि बोलो ना, कुछ तो बोलो ना...॥

ॐ ह्रीं अष्टमभूमौ जिनपूजा कृत्वा द्वितीयपीठे इन्द्रगत्यभावातिशय-व्यवस्थासंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥14॥

धनुष पाँच सो पच्चिस सूची, चार धनुष हो ऊँचे।
आठ सीढ़ियाँ कंचन खम्भे, रत्न सुराही जैसे॥
शिखरों पर के अमलसार ने, मन को मोह लिया है।
खुश होकर जिनवर ने तुझ पर, आसन थाम लिया है॥
भूमि बोलो ना, कुछ तो बोलो ना...॥

ॐ ह्रीं अष्टमभूमौ स्तम्भशिखरामरगोलायुक्त-द्वितीयपीठसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥15॥

मण्डप पर मोती की झालर, शिखर कलश ध्वज ऊपर।
बारह गुने उच्च जिनवर से, अशोक तरु हों अन्दर॥
चारों विदिशाओं में रहकर, सबको साथ दिया है।
खुश होकर जिनवर ने तुझ पर, आसन थाम लिया है॥
भूमि बोलो ना, कुछ तो बोलो ना...॥

ॐ ह्रीं अष्टमभूमौ विविधरचनायुक्त जिननतुतः द्वादशगुणोच्चाशोकवृक्षसंयुक्त समवसरण-स्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥16॥

अशोक तरु की जड़ हीरे की, सोने की शाखायें।
पन्नामणि के सुन्दर पत्ते, मरकत पुष्प सुहाएँ॥
सरस मनोहर श्रेष्ठ फलों से, मण्डप पूर दिया है।
खुश होकर जिनवर ने तुझ पर, आसन थाम लिया है॥
भूमि बोलो ना, कुछ तो बोलो ना...॥

ॐ ह्रीं अष्टमभूमौ श्रीमण्डपोपरि-विविधरचनायुक्ताशोकवृक्ष-शोभासंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥17॥

इसी पीठ की आठ दिशा में, आठ ध्वजा सुन्दर सीं।
चक्र सिंह हाथी नभ माला, ऋषभ गरुण पंकज सीं॥
आठों मंगल द्रव्य धूप घट, सबने नमन किया है।
खुश होकर जिनवर ने तुझ पर, आसन थाम लिया है॥
भूमि बोलो ना, कुछ तो बोलो ना...॥

ॐ ह्रीं अष्टमभूमौ अनेकरचनायुक्त-द्वितीयपीठसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥18॥

एक हजार धनुष सूची की, रत्न पीठ हो तीजी।
चार धनुष की ऊँची जिसमें, आठ रत्न की सीढ़ी॥
उस पर गन्धकुटी चौकोनी, हमने ध्यान किया।
खुश होकर जिनवर ने तुझ पर, आसन थाम लिया है॥
भूमि बोलो ना, कुछ तो बोलो ना...॥

ॐ ह्रीं अष्टमभूमौ एकसहस्रधनुरायत-चतुर्धनुरुच्च-तृतीयपीठयुक्त-पीठत्रयोपरि-समचतुष्कोण-गंधकुटीसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥19॥

ऋषभनाथ की गन्ध कुटी की, लम्बाई चौड़ाई।
छह सौ धनुष बताई पूरी, नौ सौ धनुष ऊँचाई॥
आगे क्रमशः हीन-हीन हो, सार्थक नाम दिया है।
खुश होकर जिनवर ने तुझ पर, आसन थाम लिया है॥
भूमि बोलो ना, कुछ तो बोलो ना...॥

ॐ ह्रीं अष्टमभूमौ चतुर्विंशतिजिनेन्द्राणां क्रमहीनविस्तारापन्न गंधकुटीसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥20॥

गन्धकुटी में त्रय सिंहासन, फटिक आदि मणियों के।
जिस पर लाल कमल शोभित हो, हजार पंखुड़ियों के॥
चौ अंगुल ऊँची कणिका हो, वर्णन कौन किया है।
खुश होकर जिनवर ने तुझ पर, आसन थाम लिया है॥
भूमि बोलो ना, कुछ तो बोलो ना...॥

ॐ ह्रीं अष्टमभूमौ वचनागोचर-विविधरत्नमय-गंधकुटीसिंहासनसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥21॥

उस पर अन्तरिक्ष में श्रीजी, भामण्डलमय शोभें।

निराधार जिनवर की पूजा, करे इन्द्र मन मोहें॥
वचन अगोचर महिमा जिनकी, चेतन धन्य किया है।
खुश होकर जिनवर ने तुझ पर, आसन थाम लिया है॥
भूमि बोलो ना, कुछ तो बोलो ना...॥

ॐ ह्रीं अष्टमभूमौ सहस्रपत्रयुक्त-सुवर्णकमलोपरि चतुरंगुलान्तरीक्ष-जिनसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥22॥

(ज्ञानोदय)

आदिनाथ की धनुष पाँच सौ, साढ़े चार चार सो धनु।
साढ़े तीन तीन ढाई दो डेढ़, एक फिर नब्बे धनु॥
अस्सी सत्तर षठ पचास फिर, पैंतालीस चालीस की जय।
पैंतीस तीस पच्चीस बीस पंद्रह, दशक सबा-द्वय पौने-द्वय॥

(दोहा)

तीर्थंकर ऊँचाईयाँ, गाई धनुष प्रमाण।
नमोऽस्तु कर चौबीस को, क्रमशः हो कल्याण॥

ॐ ह्रीं अष्टमभूमौ जिनतनुसमानकान्तियुक्त-येतत्पद्योक्तजिनकायोच्चता-शोभासंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥23॥

चारों कोट वेदियाँ पाँचों, चार गुने प्रभु से ऊँचे।
तथा जिनालय कोट वेदियाँ बारह गुने रहे ऊँचे॥
और साथ में द्वार स्तूप वा, मानस्तंभ रू क्रीड़ा थान।
नृत्यशाल वा कल्पवृक्ष भी, सिद्धारथ तरु इतने जान॥

(दोहा)

बारह कोठे मध्य में, श्री मण्डप जिन धाम।
प्रभु से हो बारह गुने, ऊँचे जिन्हें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं अष्टमभूमौ समवसरणरचना-तुङ्गताप्रमाणसंयुक्त समवसरणस्थित जिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥24॥

श्रीमण्डप भूमि बारह सभा अर्घ्य

(विष्णु)

पूर्व दिशा में प्रथम सभा जो, गणधर मुनियों की।
सुनें देशना करें अर्चना, तीर्थंकर प्रभु की॥

ॐ ह्रीं श्री गणधर मुनि समूह-अर्चित समवसरणस्थ वृषभादिवीर जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं... ॥1॥

दूजी सभा कल्पवासिनी, देवी जन भरतीं।
कर-कर के गुणगान प्रभु के, बहुत पुण्य भरतीं॥

ॐ ह्रीं श्री कल्पवासिनीदेवी समूह-अर्चित समवसरणस्थ वृषभादिवीर जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं...।12॥

तीजी सभा आर्यिकाओं के, साथ श्राविका की।
नारी की पर्याय सफल हो, यही भाव भातीं॥

ॐ ह्रीं श्री आर्यिका-श्राविका समूह-अर्चित समवसरणस्थ वृषभादिवीर जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं...।13॥

चौथी सभा ज्योतिषी देवी, भरें उजाले कर।
आत्मज्ञान की ज्योति तलाशें, प्रभु की पूजा कर॥

ॐ ह्रीं श्री ज्योतिषीदेवी समूह-अर्चित समवसरणस्थ वृषभादिवीर जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं...।14॥

सभा पाँचवी भरें देवियाँ, व्यंतर सुर वाली।
यहाँ वहाँ न भटकें प्रभु की, देखें दीवाली॥

ॐ ह्रीं श्री व्यंतरदेवी समूह-अर्चित समवसरणस्थ वृषभादिवीर जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं...।15॥

छटवीं सभा भवनवासी की, भरी देवियों से।
प्रभु पूजा कर चाह रहे हम, मिलें सिद्धियों से॥

ॐ ह्रीं श्री भवनवासीदेवी समूह-अर्चित समवसरणस्थ वृषभादिवीर जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं...।16॥

सप्तम सभा भवनवासी के, देव समूह भरें।
भवनों का भवभ्रमण नशाने, प्रभु गुणगाान करें॥

ॐ ह्रीं श्री भवनवासीदेव समूह-अर्चित समवसरणस्थ वृषभादिवीर जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं...।17॥

व्यंतर देव सभा अष्टम को, भरें खचाखच रे।
प्रभु पूजा से जो भी माँगें, हो जाता सच रे॥

ॐ ह्रीं श्री व्यंतरदेव समूह-अर्चित समवसरणस्थ वृषभादिवीर जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं...।18॥

देव ज्योतिषी नवम सभा को, प्रभु को पूज भरें।
आत्म ज्योति को पाने तरसें, निज में पुण्य भरें॥

ॐ ह्रीं श्री ज्योतिषीदेव समूह-अर्चित समवसरणस्थ वृषभादिवीर जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं...।19॥

दसवीं सभी कल्पवासी सुर, खुश होकर भर लें।
पुण्यफला के दर्शन करके, जन्म सफल कर लें॥

ॐ ह्रीं श्री कल्पवासीदेव समूह-अर्चित समवसरणस्थ वृषभादिवीर जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं...।10॥

मानव भरें सभा ग्यारहवीं, संयम पाने को।
समवसरण में जगह प्राप्त हो, प्रभु बन जाने को॥

ॐ ह्रीं श्री मनुष्य समूह-अर्चित समवसरणस्थ वृषभादिवीर जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं...।11॥

भरें सभा तिर्यंच बारवीं, तीर्थंकर पद में।
बध बन्धन के कष्ट मिटाने, झुकते जिन पद में॥

ॐ ह्रीं श्री तिर्यंच समूह-अर्चित समवसरणस्थ वृषभादिवीर जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं...।12॥

समवसरण में चक्रवर्ती नारायण गमन वर्णन

(दोहा)

समवसरण में जब हुए, तीर्थंकर आसीन।
चरणों में तब लोक त्रय, कर नमोऽस्तु हो लीन॥

(ज्ञानोदय)

लगे जहाँ पर समवसरण तो, सकल चराचर खुश होते।
अतिशय देख भक्त सब दौड़े, बीज पुण्य सुख के बोते॥
राजा महाराजा अधिराजा, नारायण प्रतिनारायण।
मण्डलीक महामण्डलीक सब, झुके चक्रवर्ती क्षण-क्षण॥1॥
समवसरण ज्यों लगे जहाँ पर, षट् ऋतु वहाँ फलें फूलें।
समाचार तब वनमाली से, पाकर राजा पद छूलें॥
तुरत उतर सिंहासन से वह, सात कदम चलकर आगे।
परोक्ष कर अष्टांग नमोऽस्तु, कहे भाग्य अपने जागे॥2॥
राज्य पधारा समवसरण सो, चलिए पूजें तीर्थंकर।
अतः चले चक्री नारायण, वस्त्राभूषण धारण कर॥
मुकुट शीश पर हार गले में, कानों में कुंडल धारे।
लम्बा तिलक लगा माथे पर, बाजूबंद भुजा धारे॥3॥
धरे अंगूठी हर अंगुली में, कलाइयों में पहन कड़े।
सज धज कर नृप ठुमक-ठुमककर, प्रभु दर्शन को निकल पड़े॥
रूप लगे ऐसे जैसे कि, वसुन्धरा हर्षायी हो।
गज पर चढ़कर अष्ट द्रव्य ले, प्रभु पूजा को आई हो॥4॥
आगे चक्र सुदर्शन चलता, फिर चक्री फिर सेनाएँ।
हाथी घोड़ा रथ प्यादे सब, प्रभु का वैभव दर्शाएँ॥
हाथी दाँत रत्न से चित्रित, घंटी सुन्दर शब्द करे।
चार तरह की सेनाओं का, वर्णन पूरा कौन करे॥5॥
नृप सेना के साथ-साथ में, विद्याधर सुर देव चलें।
करें नमोऽस्तु तीर्थंकर को, जय हो! जय हो! शब्द कहें॥
हाथी घोड़ा रथ सुन्दर से, तरह-तरह के सैनिक हैं।
अस्त्र शस्त्र से रहे सुसज्जित, सूर्यमुखी कर में ध्वज हैं॥6॥
सोलह हज़ार देव साथ में, विद्याधर निज वाहन में।

चक्री के सब आगे चलते, पुण्य कमाते जीवन में॥
यह वैभव से समवसरण में, चक्री जहाँ प्रवेश करें।
सीढ़ी चढ़कर मानस्तंभ को, सादर पूजें हर्ष करें॥7॥
क्रमशः-क्रमशः अष्ट भूमियाँ, श्री मण्डप फिर गंधकुटी।
जहाँ विराजे प्रभु दर्शन कर, सुप्त चेतना जाग उठी॥
छत्र चँवर सिंहासन आदिक, प्रातिहार्य के मध्य रहे।
अन्तरिक्ष में तीर्थंकर प्रभु, भक्तों के सान्निध्य रहे॥8॥
मनमोहक संगीत गीतमय, चक्री प्रभु को पूज रहा।
जिनदर्शन से निजदर्शन में, शुद्धातम को खोज रहा॥
सफल हुए हैं नयन हमारे, तीर्थंकर के दर्शन कर।
अनन्त भवसागर यूँ लगता, शेष रहा ज्यों चुल्लू भर॥9॥
तीर्थंकर के यश का वर्णन, सुरगुरु गणधर कर न सकें।
तो हम कैसे कह पाएंगे, सो नमोऽस्तु कर शीश रखें॥
धन्य-धन्य सौभाग्य पुण्य है, जड़ चेतन का मेला है।
फिर भी चेतन अलग झलकता, अतः चरण में चेला है॥10॥
दुनियाँ के सारे जड़ वैभव, जिनपूजा से मिलते हैं।
अधिक कहें क्या निजचेतन के, बाग यहीं पर खिलते हैं॥
'सुव्रत' की बस यही प्रार्थना, समवसरण में स्थान मिले।
भले रहें हम दुखी दरिद्री, पर जिनशासन शान मिले॥11॥

(सोरठ)

चित् चैतन्य मुकाम, तीर्थंकर जिनवर रहे।
मिले मुक्ति का धाम, सो नमोऽस्तु हम कर रहे॥

===

केवलज्ञान पूजा

(दोहा)

अष्टम भू में इन्द्र जा, पूजे केवलज्ञान।
हम तो केवल कर रहे, नमोऽस्तु कर सम्मान॥

(आँचलीबद्ध चौपाई) (पाँचों मेरु...)

केवलज्ञान धर्म की शान, हम जिन भक्तों के तो प्राण।
हरे अज्ञान, सो नमोऽस्तु करते गुणगान॥
हृदय विराजो श्री भगवान, भक्त करें सादर सम्मान।
करो कल्याण, भक्तों पर दो स्वामी ध्यान॥

ॐ ह्रीं समवसरणस्थ-केवलज्ञानी श्रीजिनेन्द्र अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो...। (पुष्पांजलिं...)

जन्म मृत्यु का कष्ट अपार, कौन कराये भव जल पार।
अतः भगवान, निज नौका-मौका दो दान॥
केवलज्ञान धर्म की शान, हम जिन भक्तों के तो प्राण।
हरे अज्ञान, सो नमोऽस्तु करते गुणगान॥

ॐ ह्रीं समवसरणस्थ-केवलज्ञानी श्रीजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

भव अज्ञान जलाता खूब, निखर न पाता चिन्मय रूप।
अतः भगवान, आत्मशान्ति दो अपना धाम॥
केवलज्ञान धर्म की शान, हम जिन भक्तों के तो प्राण।
हरे अज्ञान, सो नमोऽस्तु करते गुणगान॥

ॐ ह्रीं समवसरणस्थ-केवलज्ञानी श्रीजिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

पर को अपना कर स्वीकार, जगह-जगह खायी दुत्कार।
अतः भगवान, निज पद में दे दो विश्राम॥
केवलज्ञान धर्म की शान, हम जिन भक्तों के तो प्राण।
हरे अज्ञान, सो नमोऽस्तु करते गुणगान॥

ॐ ह्रीं समवसरणस्थ-केवलज्ञानी श्रीजिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

प्रभु चरणों की पाकर धूल, खिल जाएँ शुद्धातम फूल।
अतः भगवान, चरणों की धूली दो दान॥
केवलज्ञान धर्म की शान, हम जिन भक्तों के तो प्राण।
हरे अज्ञान, सो नमोऽस्तु करते गुणगान॥

ॐ ह्रीं समवसरणस्थ-केवलज्ञानी श्रीजिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

भोजन भजन न होते साथ, सो भोजन की त्यागें बात।
अतः भगवान, दे दो आतम का रसपान॥
केवलज्ञान धर्म की शान, हम जिन भक्तों के तो प्राण।
हरे अज्ञान, सो नमोऽस्तु करते गुणगान॥

ॐ ह्रीं समवसरणस्थ-केवलज्ञानी श्रीजिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

दीप आरती करके रोज, निजानन्द की करते खोज।
अतः भगवान, भक्तों का कीजे कल्याण॥
केवलज्ञान धर्म की शान, हम जिन भक्तों के तो प्राण।
हरे अज्ञान, सो नमोऽस्तु करते गुणगान॥

ॐ ह्रीं समवसरणस्थ-केवलज्ञानी श्रीजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

धूप होम से करके धर्म, आत्म प्राप्ति हो कटते कर्म।
अतः भगवान, करो कर्म का काम तमाम॥
केवलज्ञान धर्म की शान, हम जिन भक्तों के तो प्राण।
हरे अज्ञान, सो नमोऽस्तु करते गुणगान॥

ॐ ह्रीं समवसरणस्थ-केवलज्ञानी श्रीजिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

देख कर्म फल का विस्तार, उलझ रहा इसमें संसार।
अतः भगवान, मुक्तिवधू का दो फलदान॥
केवलज्ञान धर्म की शान, हम जिन भक्तों के तो प्राण।
हरे अज्ञान, सो नमोऽस्तु करते गुणगान॥

ॐ ह्रीं समवसरणस्थ-केवलज्ञानी श्रीजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

धर्म पंथ का करके त्याग, किसने पाया चेतन बाग।
अतः भगवान, करें अर्घ्य ले हम सम्मान॥
केवलज्ञान धर्म की शान, हम जिन भक्तों के तो प्राण।
हरे अज्ञान, सो नमोऽस्तु करते गुणगान॥

ॐ ह्रीं समवसरणस्थ-केवलज्ञानी श्रीजिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

(पूर्णार्घ्य)

रिक्त रही आतम की गोद, हो न पाया आतम शोध।
अतः भगवान, रत्नत्रय की दो संतान॥
केवलज्ञान धर्म की शान, हम जिन भक्तों के तो प्राण।

हरे अज्ञान, सो नमोऽस्तु करते गुणगान॥

ॐ ह्रीं समवसरणस्थ-केवलज्ञानी श्रीजिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

श्रीमण्डप भूमि जहाँ, गंधकुटी में नाथ।
सिंहासन पै केवली, जिन्हें झुकाएँ माथ॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो! समवसरण की, जय हो! जय हो! चेतन की।
घातिकर्म के पूर्ण विजेता, पूज्य केवली भगवन की॥
श्री मण्डप में हजार खंभे, बहुत-बहुत सुन्दर प्यारे।
जहाँ बने तोरण द्वारों पर, मणिमाला तोरण द्वारे॥1॥
श्रीमण्डप पर कलशे झण्डे, गन्धकुटी है मनभावन।
जहाँ शोभता तीन पीठ पर, सिंहासन पर कमलासन॥
जिस पर पद्मासन में शोभित, पूज्य केवली जिनवर जी।
चँवर और छत्रों से शोभित, वहीं विराजे मुनिवर जी॥2॥
भक्त इन्द्र जिनवर को भजकर, आतम पाने मचल रहे।
पूजा जयमाला को करके, परिक्रमा कर उछल रहे॥
ढोल नगाड़े वीणा वंशी, मण्डप में संगीत चले।
पूज्य केवली के दर्शन से, हम भक्तों के हुए भले॥3॥
श्रीमण्डप तो रहे केंद्र में, लघु मण्डप चउ कोनों में।
तत्त्व ज्ञान की चर्चा होती, रत्नजड़ित जिन धामों में॥
जिससे भूले भटके प्राणी, प्रभु के अनुचर बन जाते।
पुण्यफला से पुण्यफलों को, पाकर शुद्धातम पाते॥4॥
'सुव्रत'श्री मण्डप में आकर, सपने संजो रहे कैसे।
मुक्तिवधू से करें स्वयंवर, मण्डप रच जाएँ ऐसे॥
जिससे बाँझ आतमा पाए, रत्नत्रय के पुत्र अहा।
तभी आठवीं भू का वैभव, नमोऽस्तु करके तनिक कहा॥5॥

(सोरठा)

जयमाला के रूप, भक्ति भावना व्यक्त की।
पाएँ आत्म स्वरूप, यही प्रार्थना भक्त की॥

ॐ ह्रीं समवसरणस्थ-केवलज्ञानी श्रीजिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

भव्य जीवों द्वारा क्रियमाण
समवसरणस्थ चतुर्विंशति जिनपूजन

(स्थापना) (दोहा)

समवसरण में देखकर, जड़ चेतन संयोग।
सो नमोऽस्तु कर झुक रहे, चक्री आदिक लोग॥

(शंभु)

जो तीर्थंकर पद प्राप्त करे, वो समवसरण भी पाते हैं।
जड़ चेतन के सारे वैभव, उन चरणों में झुक जाते हैं॥
जब चक्री आदिक पूज रहे, ले द्रव्य भव्य त्यौहार करें।
हम हृदय बुलाते हैं भगवन्, यह अर्जी अब स्वीकार करें॥
हम आस लगाकर आए हैं, प्रभु हमें नहीं तुम ठुकराना।
हम निज को निज से मिला सकें, अरिहन्त अवस्था दिलवाना॥
है यही निवेदन आवेदन, हो मात्र प्रयोजन अब तुमसे।
परमार्थ सिद्ध यह करने को, वरदान चाहते भगवन् से॥

(दोहा)

हम करके स्थापना, चौबीसों प्रभु पूजते।
हरें कर्म अभिशाप, नमोऽस्तु कर सुख खोजते॥

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थ चतुर्विंशतिजिनेन्द्र अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो...। (पुष्पांजलिं...)

जल सोने के पात्रों में ला, प्रभु पूजा चक्री रचा रहे।
हम चक्री जैसे जीव नहीं, फिर भी तो अर्चा रचा रहे॥
ले प्रासुक जल उत्सव करके, हम जन्म-जरादिक नाश करें।
प्रभु तीर्थंकर को नमोऽस्तु कर, हम समवसरण में वास करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थ चतुर्विंशतिजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

यदि चक्री यहाँ सुखी होते, तो सुख क्यों चाहे जिनवर से।
तात्पर्य यही भवताप मिटे, हर सांसारिक इन घर भर से॥
लेकर चंदन उत्सव करके, संसार ताप का नाश करें।
प्रभु तीर्थंकर को नमोऽस्तु कर, हम समवसरण में वास करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थ चतुर्विंशतिजिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

हो भले चक्रवर्ती का पद, फिर भी वह काम नहीं आता।
सो आत्म सहारा पाने को, चक्री वैरागी हो जाता॥
ले अक्षत अक्षयपद पाने, जगपद का मोह विनाश करें।
प्रभु तीर्थंकर को नमोऽस्तु कर, हम समवसरण में वास करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थ चतुर्विंशतिजिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

ज्यों पुष्पों पर काले भौंरे, त्यों भोग चाहते मन काले।
जब चक्री तृप्त न भोगों से, तो तृप्त कौन होने वाले॥
सो पुष्प समर्पित करते हम, निज कामबाण का नाश करें।
प्रभु तीर्थंकर को नमोऽस्तु कर, हम समवसरण में वास करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थ चतुर्विंशतिजिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

षट् खंड तृप्त जब कर न सके, तो कुछ टुकड़े क्या कर लेंगे।
यह सोचो समता धारो तो, निज आतम रस हम चख लेंगे॥
नैवेद्य अतः हम चढ़ा रहे, हर आकुलता हम नाश करें।
प्रभु तीर्थंकर को नमोऽस्तु कर, हम समवसरण में वास करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थ चतुर्विंशतिजिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

जब निर्मल चित् ज्योति चाही, तो समवसरण जगमग चमका।
अब ज्ञान उजाला फैला तो, क्या काम रहा बोलो तम का॥
हम करें आरती दीपक ले, अज्ञान अँधेरा नाश करें।
प्रभु तीर्थंकर को नमोऽस्तु कर, हम समवसरण में वास करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थ चतुर्विंशतिजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

चारित्र गन्ध ज्यों फैली तो, दुर्गन्ध मिटे भव कर्मों की।
झट आत्म सुगन्धी फैल गई, भक्तों के उर में धर्मों की॥
हम धूप घटों को महकाकर, हर कर्म कीच का नाश करें।
प्रभु तीर्थंकर को नमोऽस्तु कर, हम समवसरण में वास करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थ चतुर्विंशतिजिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

फल पुण्यकर्म का पाकर के, अर्हंत विराजे हैं नभ में।
दुरुपयोग पुण्य का जो करते, वे भटक रहे हैं इस जग में॥
अरिहन्त अवस्था का फल पा, भव का फल सत्यानाश
करें। प्रभु तीर्थंकर को नमोऽस्तु कर, हम समवसरण में वास
क र ॥

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थ चतुर्विंशतिजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

परिवार सहित रहती चेतन, परिवार सहित चेतन स्वामी।
परिवार सहित प्रभु सभा लगे, परिवार सहित सो प्रणमामि॥
परिवार सहित हम अर्घ्य सजा, परिवार सहित पद वास करें।
प्रभु तीर्थंकर को नमोऽस्तु कर, हम समवसरण में वास करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थ चतुर्विंशतिजिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

(पूर्णार्घ्य)

जग की संगत से हम महके, या बहके हैं या चमके हैं।
या सोये हैं या जागे हैं, या भागे हैं या सहते हैं॥
अब संग हमें अपना दे दो, जिससे हम भी संन्यास धरें।
प्रभु तीर्थंकर को नमोऽस्तु कर, हम समवसरण में वास करें॥

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थ चतुर्विंशतिजिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

दुनियाँ में सर्वोच्च हैं, तीर्थंकर जिनराज।
जिनको नमोऽस्तु कर कहें, जयमाला हम आज॥

(श्री सिद्ध चक्र का पाठ.....)

श्री समवसरण का ध्यान, करें कल्याण, जान ले प्राणी।
प्रभु तीर्थंकर कल्याणी॥
जब तीर्थंकर प्रभु बनते हैं, तब समवसरण में थमते हैं।
फिर तत्त्व बताते बनकर आतम ज्ञानी। प्रभु...
ऐसे चौबीस जिनेश्वर हैं, जो जगत पूज्य परमेश्वर हैं।
जो शरण जगत को देते बनकर दानी। प्रभु...
जय ऋषभ आदि महावीर प्रभो, सर्वज्ञ हितंकर धीर विभो।
है जिनकी देखो जग में अमर कहानी। प्रभु...

(ज्ञानोदय)

ऋषभनाथ से वीरनाथ तक, तीर्थंकर चौबीस रहे।
जिनका वैभव हम श्रद्धालु,करके नमोऽस्तु वाँच रहे॥
चौदह सौ बावन गणधर थे, ऋषभसेन से गौतम थे।
इकलख पचासी हजार सात सौ, कुल सामान्य केवली थे॥1॥

छत्तीस हजार नौ सौ चालीस, पूर्वधारियों की गणना।
बीस लाख पाँच सो पचपन, आत्म शिक्षकों को भजना॥
एक लाख चव्वन हजार अरु, नौ सौ पाँच विपुलमती थे।
दो लाख पच्चीस हजार अरु, नौ सौ ऋद्धिधारी थे॥2॥
एक लाख सत्ताईस हजार अरु, छह सौ अवधिज्ञानी थे।
एक लाख सोलह हजार अरु, तीन शतक कुल वादी थे॥
अट्ठाईस लाख अड़तालीस हजार, कुल संघों की संख्या थी।
पचास लाख पचास हजार अरु, छह सौ पच्चीस आर्या थी॥3॥
अड़तालीस लाख श्रावक थे, छ्यानवै लाख श्राविकाएँ।
प्रत्येक तीर्थ में अनुबद्धकेवली, तेरह सौ सत्तर पाएँ॥
ग्यारह सौ ब्यासी कुल साधक, प्रभु के साथ मोक्ष पाएँ।
कुछ साधक जो चूक गए वो, सुन लो स्वर्ग पहुँच पाएँ॥4॥
चौबीसों के यक्ष यक्षिणी, चौबीसों हों चौबीसों।
कालदोष से कौन कहाँ से, मोक्ष गए प्रभु चौबीसों॥
आदिनाथ अष्टापद जाके, वासु-पूज्य चम्पापुर से।
नेमीनाथ-गिरनार गिरि से, महावीर पावापुर से॥5॥
शेष बीस तीर्थंकर जिनवर, श्री सम्मेदशिखर पर जा।
मोक्ष पधारे अतः नमोऽस्तु, हम करते हैं शीश झुका॥
श्री सम्मेदशिखर की महिमा, कितनी कौन बखान करे।
भाव सहित वन्दे जो कोई, वह अपना कल्याण करे॥6॥
नरक और तिर्यंच गति वह, कभी न पाता जीवन में।
या तो तद्भव या अगले भव, जाकर मिलता सिद्धन में॥
ऋषभ नेमि अरु वासुपूज्य प्रभु, पद्मासन से मोक्ष गए।
शेष रहे इक्कीस जिनेश्वर, खड्गासन से मोक्ष गए॥7॥
जिनका वन्दन पूजन करना, शीघ्र मोक्ष भव्यों को दे।
जब तक मोक्ष मिले ना तब तक जग के सुख भक्तों को दे॥
अतः किया हमने कुछ वर्णन, निज श्रद्धा निज शान्ति से।
बस तीर्थंकर बन जाने को, करते नमोऽस्तु भक्ति से॥8॥
भक्त सामने प्रभु के आकर, पर पदार्थ की माँग रखें।

कैसे हैं ये लोग यहाँ पर, हमको बिलकुल नहीं जमें॥
अपने तक आने को हम तो, माँग रहे प्रभु को प्रभु से।
दो या ना दो बात आपकी, 'सुव्रत' तो बस झुके-झुके॥9॥

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थ चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(सोरठा)

समवसरण में जाय, तीर्थंकर चौबीस के।
चक्री आदि गुण गाय, पूजा कर आशीष ले॥

(पुष्पांजलिं...)

दिव्य ध्वनि वर्णन

(दोहा)

समवसरण में तिष्ठ के, तीर्थंकर दे ज्ञान।
दिव्य देशना सुन करें, भव्य आत्मकल्याण॥
अतिशय श्री जिनराज के, गणधर के संयोग।
जिज्ञासा रखकर करें, आत्मशान्ति भवि लोग॥

(ज्ञानोदय)

कोठों में बैठे भव्यों ने, दिव्य देशना प्रभु से पा।
चमत्कार अतिशय को देखे, समवसरण में अब तो आ॥
अन्धे देखें बहरे सुनते, लंगड़े मस्त चाल चलते।
रोगी बने निरोगी प्राणी, दुखियों के दुख भी टलते॥1॥
चिंता भय उपसर्ग कभी भी, समवसरण में दिखें नहीं।
हर्ष खुशी से तनिक जगह में, बहुत लोग आ टिकें यहीं॥
चारों संध्या कालों में हो, छह छह घड़ी दिव्य वाणी।
होठ न हिलते अनक्षरी हो, सर्व अंग से जिनवाणी॥2॥
जैसे नभ में बिजली तड़के, जिसको सुनकर नाँचे मोर।
ऐसे दिव्य देशना सुनके, भव्य जीव हों भाव-विभोर॥
निज-निज भाषा में सब समझें, तत्त्वज्ञान उपदेश यहाँ।
धन्य जन्म कर पाप हनन कर, पाते जिनवर भेष यहाँ॥3॥
फिर अरिहन्त सिद्ध बन जाते, दिगम्बरत्व का ये अतिशय।
प्रभु की जय बोलो तो अपनी, हो जाएगी निश्चित जय॥
किन्तु अभव्य जीव तो केवल, सप्तम भूमि तक जाते।

बैठ सके न कोठों में वे, नहीं दिव्यध्वनि सुन पाते॥4॥
हाय हाय यह जीव अवस्था, साक्षात् न दर्शन होते।
आगे की फिर कथा कहें क्या, हम है जीव बहुत छोटे॥
'सुव्रत' की बस यही प्रार्थना, समवसरण में स्थान मिले।
भेदाभेद धरें रत्नत्रय, शुद्धातम निर्वाण मिले॥5॥

(सोरठा)

तीर्थंकरा स्वरूप, लगे लाड़ला भव्य को।
नमोऽस्तु का प्रारूप, लगे लाड़ला भक्त को॥
परंपरा यह देख, कर्म नशें सुख प्राप्त हो।
मुनिसुव्रत सिर टेक, परंपरा से आप्त हों॥

सभानायक वर्णन

चौबीसों के समवसरण के, क्रमिक सभापति हीरा से।
ऋषभनाथ के भरत चक्री हों, श्रेणिक राजा वीरा के॥
प्रश्न साठ हजार के कर्ता, नाथ! अनुत्तर उत्तर दें।
धन्य!धन्य! वे जीव यहाँ पर, निज नर-भव सार्थक कर लें॥

(दोहा)

तीर्थंकर के पद कमल, सब पूजें सिर टेक।
नमोऽस्तु कर 'सुव्रत' भजें, मिटे कर्म का लेख॥

श्री जिनेन्द्र (समवसरण) विहार वर्णन

(दोहा)

समवसरण से ज्ञान दे, भव्यो के हितकार।
करे निवेदन इन्द्र फिर, प्रभुजी करे निहार॥

(रोला)

प्रभुजी करें विहार, करे यह इन्द्र निवेदन।
सुखी रहे संसार, कृपा बरसाओ भगवन॥
पाकर तेरा साथ, नाथ! हम कर्म नशायें।
टेक रहे हम माथ, रात दिन प्रभु को ध्याएँ॥1॥
इन्द्र जोड़ कर हाथ, करे गुणगान प्रभु के।
सुनो! प्रभुजी बात, भव्य दर्शन के भूखे।
करिये अतः विहार, निहारो हमको स्वामी।

हो जाए उद्धार, सिद्ध हों हम आगामी॥2॥
सुनकर इन्द्र पुकार, त्यागकर समवसरण को
जिनवर करें विहार, भाग हम पड़ें चरण को॥
जहाँ चलें भगवान, वहाँ के अगल-बगल में।
षट् ऋतु के बागान, फलें फूलें पल-पल में॥3॥
खेतों में हो धान्य, अठारह भेदों वाला।
ताल सरोवर कुण्ड, पिलाते जल सुख वाला॥
दृश्य देखकर देव, सुगंधित जल बरसाते।
जिनके कण स्वयमेव, पवन में घुल मिल जाते॥4॥
योजन तक भू छोर, धूल कण्टक बिन बाधा।
रत्न कोट द्वय ओर, उच्च हो योजन आधा॥
बाहर दोनों ओर, खेत वन पर्वत नदियाँ।
हम हों भाव विभोर, लगे वर्णन में सदियाँ॥5॥

(हरीगीतिका)

सदियाँ लगें विस्तार में सो, हम कहें आगे कथा।
जो भक्त जन के पाप हरके, दूर करती भव व्यथा॥
जिस मार्ग से अर्हंत गुजरें, उच्च वो प्रभु सम रहे।
नभ में चलें प्रभु सो रचें सुर, वो कमल स्वर्णिम रहे॥6॥

(ज्ञानोदय)

पन्द्रह पन्द्रह की हो पन्द्रह, कमलों की स्वर्णिम पंक्ति।
कुल दो सौ पच्चीस केंद्र में, नभ में चले मोक्ष पंथी॥
चले चार अंगुल प्रभु ऊँचे, पग रखकर मानव जैसे।
बिन इच्छा प्रभु चलते कैसे, शंकालु सोचें ऐसे॥7॥
मोह जयी के इच्छा ना हो, फिर भी बैठे उठते हैं।
पग रखते हों दिव्य देशना, जिनको हम सब झुकते हैं॥
संघ चतुर्विध विहार करते, विद्याधर तिर्यंच चलें।
मनुज चलें सुर देव नाँचकर, प्रातिहार्य ले द्रव्य चलें॥8॥
छत्र चँवर ले धर्मचक्र ले, जय-जय करके अग्र चलें।
जिनवर के गुणगान भजन कर, पुण्य कमाने भक्त चलें॥

ऊपर कर मुख भक्त निहारें, अधोगमन फिर क्यों होगा।
समवसरण में तीर्थंकर को, भजना अच्छा ही होगा॥9॥
तीर्थंकर का भजना 'सुव्रत', चित चैतन्य चमत्कारी।
भक्त बनें भगवान पूजकर, पा लेंगे मुक्ति नारी॥
चरण शरण जो पाएंगे वो, सदा रहेंगे आभारी।
अतिशयकारी अतिशय होंगे, भटकेंगे ना संसारी॥10॥

(सोरठ)

समवसरण विस्तार, इन्द्र धनद को कह करें।
प्रभु जी करें विहार, इन्द्र निवेदन जब करें॥
हम करते गुणगान, आत्म हितैषी अब हुए।
कृपा करो भगवान, हम नमोऽस्तु कर पद छुए॥

(पुष्पांजलिं...)

प्रशस्ति

पृथ्वीपुर में पार्श्व का, होगा गजरथ नेक।
समवसरण पूरा हुआ, जिन विधान सिर टेक॥
दो हजार सत्रह रहा, सत्रह मई तारीख।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

॥ इति शुभम् ॥

महार्घ्य

(हरिगीतिका)

अर्हंत सिद्धाचार्य आदि, देव परमेष्ठी भजें।
रत्नत्रयी दसधर्म पूजें, भावना सोलह भजें॥
कृत्रिम अकृत्रिम बिम्ब आलय, हम भजें त्रयलोक के।
अनुयोग चारों तीर्थ पाँचों, पूजते हम ढोक दे॥
प्रभु नाम कल्याणक भजें, नन्दीश्वरा मेरु भजें।
श्री सिद्ध-अतिशयक्षेत्र पूजें, तीस चौबीसी भजें॥
मन से वचन से काय से हम, जैनशासन पूजते।
जिन पूजकर निज प्राप्ति हेतु, चेतना सुख खोजते॥

(दोहा)

सर्व पूज्य को हम भजें, आत्मसिद्धि के काज।
महा अर्घ्य ले पूजते, करके नमोऽस्तु आज॥

ॐ ह्रीं भावपूजा-भाववन्दना-त्रिकालपूजा-त्रिकालवन्दना-कृत-कारित- अनुमोदना-विषये श्री अर्हंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-रूप-पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोग-रूप-द्वादशांग-जिनागमेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि-दशलक्षण-धर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। उर्ध्वलोक-मध्यलोक-अधोलोक-संबंधिनः-त्रिलोक-स्थित-कृत्रिम-अकृत्रिम-जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र-स्थित-विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः। पंचभरत-पंचऐरावत-दशक्षेत्र-संबंधिनः त्रिंशत्-चतुर्विंशति-संबंधिनः-सप्तशतक-विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीप-संबंधिनः-द्विपंचाशत्-जिनालयस्थ-पंचसहस्र-षट्शतक-षोडश-जिनबिम्बेभ्यो नमः। पंचमेरु-सम्बधी-अशीति जिनालयस्थ-अष्टसहस्र-षट्शतक-चत्वारिंशत्-जिनबिम्बेभ्यो नमः। श्रीसम्मेदशिखर-अष्टापद-गिरनार-चम्पापुर-पावापुर-कुंडलपुर- पवाजी-सोनागिरादि-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री-मूढ़बद्री-हस्तिनापुर-तिजारा-पद्मपुरा-पद्मपुरा-महावीरजी-हाटकापुरा-खंदारजी-चौबीसी-चंदेरी आदि-अतिशय-क्षेत्रेभ्यो नमः। श्रीवृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरादि-नवदेवता-जिन-समूहेभ्यो-जलादि-महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तिपाठ

(हरीगीतिका)

हम इन्द्र चक्री तो नहीं बस, मूढ़ जैसे भक्त हैं।
धन ज्ञान वा सम्यक् क्रिया की, शास्त्र विधि से रिक्त हैं॥
बस आपके श्रद्धालु हैं हम, भक्ति को मजबूर हों।
सो गल्तियाँ होना सहज हैं, जो क्षमा से दूर हों॥

तुम तो क्षमा अवतार हो, प्रभु दान दो उत्तम क्षमा।
तो हम क्षमाधारी बनें कुछ, पुण्य पूजा से कमा॥
जब तक क्षमा का धाम निज में, ना मिले विश्राम तो।
तब तक मिले अर्हंत शरणा, सिद्ध प्रभु का ध्यान हो॥

(दोहा)

परमेष्ठी नवदेवता, चौबीसों भगवान।
पाप हरें सुख शान्ति दें, करें विश्व कल्याण॥

(शान्तये शान्तिधारा...) (जल की धारा करें)

अपने उर में बह उठे, विश्व शान्ति की धार।
कर्मों के ग्रह शान्ति को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

(शान्तये शान्तिधारा...) (चंदन की धारा करें)

(हरीगीतिका)

अभ्यास शास्त्रों का करें, निर्ग्रन्थ गुरु की अर्चना।
हो विश्व शान्ति आत्म शान्ति, पूर्ण हो यह प्रार्थना॥
हों रोग ना व्याधि किसी को, खेद ना दुख कष्ट हों।
मौसम सदा अनुकूल होवे, जीव ना पथ भ्रष्ट हों॥

(दोहा)

परमेष्ठी का मंत्र जो, महामंत्र णमोकार।
हम सब मिलकर अब यहाँ, मत्र जपें नौ बार॥

(पुष्पांजलिं... कायोत्सर्गं...)

विसर्जन पाठ (दोहा)

ज्ञान और अज्ञान से, रही भूल जो नाथ।
आगम-विधि वो पूर्ण हो, पाकर तेरा हाथ॥
मंत्रादिक से हीन मैं, नहिं पूजन का ज्ञान।
मुझे क्षमा कर दीजिये, चरण शरण का दान॥
शीश झुकाऊँ आज मैं, हो पूजा सम्पन्न।
पाप हरो मंगल करो, करो मुझे प्रभु धन्य॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः अर्हदादि परमेष्ठिनः पूजन विधिं विसर्जनं करोमि। अपराध क्षमापणं भवतु। (कायोत्सर्गं...)

===

आरती–विधान

समवसरण की आरती उतारो मिलके।
चौबीसों भगवान् को निहारो मिलके॥

वृषभ अजित शम्भव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनचन्द्र।
पुष्पदंत शीतल श्रेयांसजिन, वासुपूज्य प्रभु विमल अनन्त॥
धर्म शान्ति कुंथू अर मल्ली, मुनिसुव्रत नमि नेमि महान्।
पार्श्व वीर प्रभु चौबीसों हों, मंगलमय मंगल भगवान्॥

समवसरण की आरती उतारो मिलके।
चौबीसों भगवान् को निहारो मिलके॥

निर्मोही निर्ग्रन्थ सभी हैं, किन्तु मोह लें सब संसार।
रहे दिगम्बर पूर्ण निरम्बर, फिर भी जिनके ग्रन्थ हजार॥
धर्म चक्र की धुरी यही तो, धारें तारणतरण जहाज।
भू नभ अम्बर से ऊँचे पर, करें भक्त के दिल पर राज॥

समवसरण की आरती उतारो मिलके।
चौबीसों भगवान् को निहारो मिलके॥

भूल-भुलैया भव की भँवरे, जिनमें हो हमसे भी भूल।
किन्तु हमें ना आप भुलाना, दे देना चरणों की धूल॥
तुमसे तुमको माँग रहे हम, भर-भर झोली दो वरदान।
'सुव्रतसागर' करें नमोऽस्तु, भक्त आरती करें प्रणाम॥

समवसरण की आरती उतारो मिलके।
चौबीसों भगवान् को निहारो मिलके॥

===

आरती—पंचपरमेष्ठी

जिनवर की बोलो जय-जय रे, आरतिया उतारो।
हाँ-हाँ रे...आरयिा उतारो॥

१. पहली आरती श्रीजिनराजा, भवदधि पार उतार जहाजा।
२. दूसरी आरती सिद्धन केरी, सुमरन करत मिटै भव फेरी।
३. तीसरी आरती सूरि मुनिन्दा, जनम-मरण दुख दूर करिन्दा।
४. चौथी आरती श्री उवझाया, दर्शन देखत पाप पलाया।
५. पाँचवी आरती साधु तिहारी, कुमति विनाशन शिव अधिकारी।

भजन

हे! स्वामी तेरी पूजा करूँ मैं-२,
हर पल तेरी अर्चा करूँ मैं॥

सावन का महीना होगा, उसमें होगी राखी।
विष्णु मुनि जैसी सेवा करूँ मैं, हर पल...॥१॥
भादों का महीना होगा, उसमें होगी वारिश।
दसलक्षण की चर्चा करूँ मैं, हर पल...॥२॥
कार्तिक का महीना होगा, उसमें होगी दीवाली।
वीर प्रभु जैसी मुक्ति वरूँ मैं, हर पल...॥३॥
फागुन का महीना होगा, उसमें होगी होली।
अष्टाह्निक के रंग रंगूँ मैं, हर पल...॥४॥
वैशाख का महीना होगा, उसमें होगी अख-ती।
राजा श्रेयांस-सोम सा दान करूँ मैं, हर पल...॥५॥
आषाढ़ का महीना होगा, उसमें होगा चौमासा।
विद्या गुरु की भक्ति करूँ मैं, हर पल...॥६॥

आरती–आचार्य श्री 108 विद्यासागरजी महाराज

तुम भी करो हम भी करें, गुरुवर की आरति।[२]
श्री विद्यासागर जी शिवपुर के सारथी॥[२]

आओ! आओ! हिल-मिल के, हम भी पूजें चरणा।[२]
चारों धामों के तीरथ, गुरुवर की शरणा॥[२]
तुम भी गीत गाओ रे, हम भी गीत गाएँ[२]
गुरुवर की किरपा, भव-सागर से तारती॥[२]
तुम भी ..... ॥

चंदा ने चम - चम ये थालियाँ सजायीं।[२]
सूरज ने झिल-मिल ये किरणें भिजायीं॥[२]
तुम भी दीप ले लो रे, हम भी दीप ले लें[२]
दीपों की ज्योति भी, इनको निहारती॥[२]
तुम भी ..... ॥

सुर - इन्द्र गुरुवर के, दर्शन को तरसें।[२]
'सुव्रत' करके आरति, मन ही मन हरषें॥[२]
जाने ना सुर छन्द, भक्ति ना जानें।[२]
फिर भी गुरु चरणों में, झुकते हम भारती॥[२]
तुम भी ..... ॥

===